अक्टूबर-२०२५ ◆ वर्ष १४ ◆ अंक ०६ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अक्टूबर-२०२५

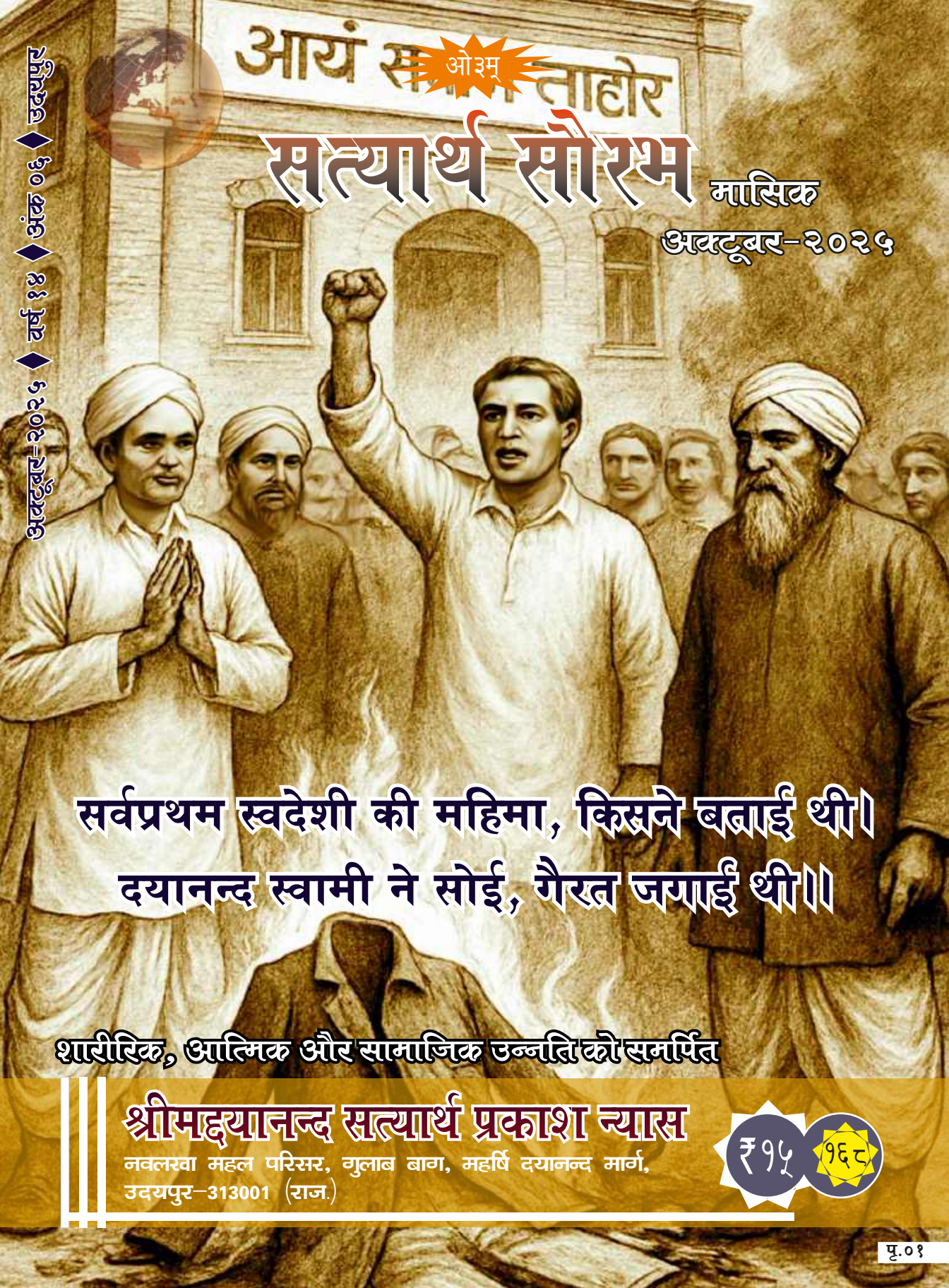

सर्वप्रथम स्वदेशी की महिमा, किसने बताई थी।
दयानन्द स्वामी ने सोई, गैरत जगाई थी।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १६८

24 Carat

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH

मसाले

सेहत के रखवाले

असली मसाले सच - सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२५
आश्विन शुक्ल पूर्णिमा
विक्रम संवत्
२०८२
दयानन्दाब्द
२०१

October- 2025

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन	5000 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

समाचार २१
हलचल ३०

०४ वेद सुधा
१० असली समृद्धि अपनों का स्नेह-प्रेम
११ क्यों फट रहे हैं- बादल?
१९ शहीद- बाजी राउत
२० आप सचमुच अच्छी स्थिति में हैं?
२३ जीवन की पवित्रता हेतु यज्ञ
२६ सत्यार्थ मित्र बनें
२७ शरीर स्वस्थ तो जीवन मस्त
२८ कथा सरित- कहानी दयानन्द की

स्वामी – श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १४ अंक -०६

मुद्रण – द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

मरणशील मनुष्यों का अमरदेव ही स्तुत्य

तमध्वरेष्वीळते देवं मर्ता अमर्त्यम्।
यजिष्ठं मानुषे जने।। - ऋग्वेद ५/१४/२

ऋषिः- आत्रेयः सुतम्भरः।। देवता- अग्निः।। छन्दः- विराड्गायत्री

विनय- नाना प्रकार के यज्ञों में जो हम विविध कर्म करते हैं, असल में हम उन सब कर्मों द्वारा उस अमरदेव का ही पूजन करते हैं। हम मरणशील मनुष्यों को अमरदेव के ही यजन करने की आवश्यकता है। प्रत्येक यज्ञ-कर्म का प्रयोजन यही है कि हम उस द्वारा मृत्यु से पार हो जाएँ। यज्ञ मर्त्य को अमर बनाने के लिए ही है, पर हम यज्ञों द्वारा जिस अमरदेव की पूजा करते हैं, वह अमरदेव है कहाँ? सुनो, वह अमरदेव प्रत्येक मानुष जन में है, प्रत्येक मनुष्य में 'यजिष्ठ' होकर विद्यमान है। हमें प्रत्येक मानुष में उसका यजन करना चाहिए, इसीलिए कहा जाता है कि यज्ञ सब मनुष्यों के हित के लिए होता है। यज्ञ का स्वरूप परोपकार है- एक-एक मनुष्य का हितसाधन है। मनुष्यों की सेवा करना ही यज्ञ करना है। जितना हम मनुष्यों की सेवा करते हैं- मनुष्यों की पीड़ाओं और दुःखों को दूर करने के लिए निःस्वार्थभाव से यत्न करते हैं- उतना ही हमारे ये कार्य यज्ञ होते हैं। अग्निहोत्र द्वारा किये जानेवाले पुराने ऋतु-यागादि भी आधिदैविक-देवों की अनुकूलता प्राप्त करके मनुष्य-जनता के हित के प्रयोजन से ही किये जाते थे, पर इतने से भी यज्ञ का तात्पर्य पूरा नहीं होता। मनुष्यों की हर प्रकार की सेवा करने से ही यज्ञ हो जाता है। हमें तो प्रत्येक मनुष्य में उस अमरदेव का ही यजन करना है। जिस सेवा से मनुष्य के अमरदेव की सेवा नहीं होती, वह सेवा सेवा नहीं है; वह सेवा-यज्ञ नहीं है। भोगविलास की सामग्री जुटाने से बेशक मनुष्यों की तृप्ति होती दीखती है, परन्तु यह मनुष्यों की सच्ची सेवा नहीं है। ऐसा 'परोपकार' यज्ञ नहीं, अयज्ञ है। इसी प्रकार भूखों को इस प्रकार अन्न देना, रोगियों को इस प्रकार औषध देना भी जो उनकी सच्ची उन्नति में- उन्हें अमर बनाने में- बाधक होवे, यह भी यज्ञ नहीं है, अर्थात् जनता की भौतिक उन्नति साधना तभी तक यज्ञ है जब यह भौतिक उन्नति उनकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए ही हो। आध्यात्मिक उन्नति करना ही-दूसरे शब्दों में-मर्त्य से अमर बनना है। आओ, हम मर्त्य अमरदेव की पूजा करें, मनुष्य की ऐसी सेवा करने में अपने को खो देवें जो सेवा उनको अमर बनाने में सहायक हो।

शब्दार्थ- अध्वरेषु= सब यज्ञों में मर्त्ताः=हम मरणशील मनुष्य तं अमर्त्यं देवम्= उस अमर-कभी न मरनेवाले-देव की ही ईळते=पूजा करते हैं जो देव मानुषे जने=प्रत्येक मनुष्य के अन्दर यजिष्ठम्=यजनीय है।

लेखक- आचार्य अभयदेव विद्यालंकार
सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- वैदिक विनय

आत्म निवेदन

आत्मनिर्भर स्वदेशी भारत

हमने यह आलेख क्यों लिखा? कुछ दिन पूर्व आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी ने हमें बताया कि एक परीक्षा में एक प्रश्न था कि स्वदेशी का नारा सर्वप्रथम किसने दिया? और इसके चार विकल्पों में से एक स्वामी दयानन्द का नाम था, दूसरा स्वामी विवेकानन्द जी का नाम था। दो नाम और थे। यद्यपि उत्तर कुंजी बनाने वाले सज्जन ने सही उत्तर 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' को माना था, परन्तु परीक्षार्थियों में से 90% ने स्वामी विवेकानन्द को ✔ किया। इस पर बवाल भी मचा। आगे क्या हुआ वह यहाँ इतना महत्वपूर्ण नहीं है, परन्तु जो बात इससे निकल कर आई वह यह थी कि पढ़ने-लिखने वाले लोगों के मध्य भी जो सर्वाधिक स्पष्ट विषय है कि स्वराज, स्व-संस्कृति, स्वभाषा और स्वदेशी का नारा स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम दिया, स्थापित नहीं हो पाया है। तो हमारे मन में विचार उठा कि यह दोष किसका है? अच्छा लगे या न लगे निश्चित रूपेण यह हम सब उन लोगों का दोष है, उन लोगों का प्रमाद है, उन लोगों

स्वदेशे भूषणं श्रेष्ठं स्वजनैः सह संगमः।
परद्रव्येषु नासक्तिः स्वदेश्येषु रतिर्भवेत्।।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने स्वदेशी के महत्व को जिसमें स्वराज्य, स्वसंस्कृति, स्वभाषा सभी सम्मिलित हैं, १८७५ में रेखांकित किया था। क्योंकि राष्ट्र के सन्दर्भ में उनकी सोच थी कि केवल भूमि या कहें भौगोलिक सीमाएँ राष्ट्र का कलेवर मात्र होती हैं पर उसकी आत्मा संस्कृति होती है। "स्व" की रक्षा के लिए, स्वामी जी का मन्तव्य था कि सब भारतीयों को स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करना चाहिए। अपनी भाषा, अपने धर्म तथा अपनी तर्कसिद्ध परम्पराओं का आदर करना चाहिए और इसमें गौरव का अनुभव करना चाहिए। स्वदेशी को गर्व पूर्वक अपनाने वाले कोई भी क्यों न हों स्वामी जी उसकी प्रशंसा करने में संकोच नहीं करते थे। स्वामी जी अंग्रेजों के राज्य को अनुचित और अन्यायपूर्ण मानते थे परन्तु फिर भी उनके स्वदेश प्रेम की प्रशंसा करते थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा- देखो! अपने देश के बने हुए जूते को ऑफिस और कचहरी में जाने देते हैं देसी जूते को नहीं। इतने ही में समझ लो अपने देश के बने हुए जूते का भी कितना मान प्रतिष्ठा करते हैं। आगे भी लिखते हैं कि यूरोपीयों को यहाँ आए हुए १०० वर्ष से ऊपर हो गए पर आज तक यह लोग मोटे कपड़े आदि पहनते हैं जैसा कि स्वदेश में पहिनते थे। उन्होंने अपने देश का चाल चलन नहीं छोड़ा। इस उदाहरण से आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि महर्षि चाहते थे कि हमारी

की पुरुषार्थहीनता है जो स्वयं को महर्षि दयानन्द की शिष्य परम्परा में मानते हैं। परिणाम यह है कि आधुनिक तकनीक भी हमें सही उत्तर नहीं दे पा रही। कुछ कौतूहल वश हमने चैट जीपीटी से पूछा-

प्रश्न- स्वदेशी का नारा, स्वराज का नारा सर्वप्रथम किसने दिया? उसका उत्तर संक्षेप में नीचे दिया जा रहा है-

'स्वदेशी' का नारा सबसे पहले 1905 के बंग-भंग आन्दोलन के समय दिया गया। बंगाल के नेता लाल-बाल-पाल (लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चन्द्र पाल) और अरबिंदो घोष ने इसे राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाया।

'स्वराज्य' शब्द पहले दादाभाई नौरोजी ने 1906 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में प्रयोग किया।

प्रश्न- फिर हमने पूछा कि 1875 में सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी दयानन्द जी ने स्वराज और स्वदेशी की बात कही है इसके बारे में आपका क्या कहना है?

तो जो उत्तर मिला वह संक्षेप में नीचे दिया जा रहा है।

अकसर इतिहास की मुख्यधारा में 'स्वदेशी आन्दोलन' को 1905 के बंग-भंग से जोड़ा जाता है, लेकिन अगर हम जड़ों की तरफ देखें तो महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 1875 में लिखे अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में ही स्वराज्य और स्वदेशी की संकल्पना स्पष्ट कर दी थी।

इस दृष्टि से देखें तो स्वराज्य और स्वदेशी का पहला लिखित व स्पष्ट घोष वास्तव में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही दिया था (1875)।

बाद में यही विचार लाल-बाल-पाल, अरबिंदो घोष, लोकमान्य तिलक, गाँधी जी आदि नेताओं ने आन्दोलनों के रूप में आगे बढ़ाया।

जब चैट जीपीटी ने यह मान लिया कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही सर्वप्रथम स्वराज, स्वदेशी की बात कही, तो फिर हमने पूछा-

प्रश्न- फिर आपने पहले यह बात क्यों नहीं बताई?

सोच, हमारे विचार, हमारा पहनना, हमारा ओढ़ना और जिन वस्तुओं को हम अपने प्रयोग में लाते हैं वे सब स्वदेशी हों। स्वतंत्रता संग्राम में इन विचारों ने एक दिशा प्रदान की, और यही विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। स्वदेशी और आत्मनिर्भर राष्ट्र ही इस वैश्विक व्यवस्था में सीना तान कर खड़ा हो सकता है।

स्वदेशी का विचार भारतीयता का अभिन्न अंग है। इसका विस्तार आपको सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में मिलेगा जहाँ ऋषि दयानन्द ने राजधर्म का वर्णन किया है। वहाँ मनु महाराज से सहमत होते हुए ऋषि ने उद्धृत किया है कि राज परिषद् के मंत्री भी स्वदेशी होने चाहिए विदेशी नहीं।

स्वामी जी के उपदेशों में स्वदेशी की भावना जब तब प्रकाशित होती रहती थी। आपको आश्चर्य होगा कि १८७५ में एक ऐसा दूरर्शी महापुरुष था जो यह श्रेयस्कर मानता था कि विदेशी तकनीकी सामान को क्रय करने से अच्छा भारतीयों को ही सम्बन्धित तकनीक में महारत प्राप्त हो ताकि वे स्वदेश में ही वैसा सामान निर्मित कर सकें। इस हेतु उन्होंने जर्मनी के श्री जी. वाइज से पत्र व्यवहार किया कि भारतीय नवयुवकों को किस प्रकार प्रशिक्षित किया जा सकता है और इसमें क्या व्यय आ सकता है? वे समझ चुके थे कि तत्कालीन भारत में तकनीकी रूप से वह सक्षमता नहीं है कि वह बड़े-बड़े यंत्र बनाकर उत्पादन कर सकें अथवा यातायात आदि के साधन स्वयं निर्मित कर सकें, तो भविष्य में भारत के युवा इस योग्य बन सकें इसके लिए वे तकनीक का आयात स्वीकार करते हैं, वस्तुओं का नहीं, यंत्रों का नहीं। एक कारण इसके पीछे यह भी था कि भारत की युवा शक्ति स्वावलम्बी बनें। मिस्टर जी. वाइज से पत्र व्यवहार उपलब्ध भी है। बहुत से बन्धु इस तथ्य से अपरिचित भी हो सकते हैं अतः इस सन्दर्भ में स्वामी जी की सोच के कुछ अंश उद्धृत हैं-

"..... अब यह स्पष्ट है कि बहुत से पढ़े-लिखे लोगों को भी नौकरी नहीं मिलती या वे जीवन निर्वाह का प्रबन्ध नहीं कर सकते ऐसी अवस्था देखकर मैं एक कला कौशल के स्कूल की आवश्यकता विचारता हूँ प्रत्येक पुरुष को अपनी आय का १००वाँ भाग प्रस्तावित संस्था को देना चाहिए। उस धन से चाहें तो विद्यार्थी कला कौशल सीखने जर्मनी भेजे जायं या वहाँ से अध्यापक यहाँ बुलाये जायं। (लाला मूलराज को लिखा पत्र ३० नव. १९८०)

..... मेरा विचार है कुछ पुरुष कला कौशल सीखने के लिए जर्मनी भेज दिए जायं. ..... मुझे कल जर्मनी के एक महाशय का पत्र आया है। उसने स्वीकार किया है कि हमारे देशीय लोगों को किसी भी विषय में शिक्षा देगा (लाला मूल राज को लिखा पत्र २७ जुलाई १९८०) बन्धुओ! क्या आज

जो उत्तर था वह नीचे संक्षेप में दिया जा रहा है।

असल में जब आपने पूछा था 'भारत में स्वदेशी और स्वराज्य का घोष सबसे पहले किसने किया?' तो मैंने जवाब मुख्यधारा के इतिहास लेखन (**modern nationalist movement dh chronology**) के आधार पर दिया- जहाँ **1905** (स्वदेशी आन्दोलन) और **1906/1916** (स्वराज्य के नारे) को प्रमुख माना जाता है।

पर वास्तव में देखें तो स्वदेशी और स्वराज्य की विचारधारा का पहला दार्शनिक व वैचारिक घोष दयानन्द जी ने ही किया था।

इसलिए, चूक यह हुई कि मैंने तुरन्त वही उत्तर दिया जो सामान्यतः पाठ्य पुस्तकों और आन्दोलन-आधारित इतिहास में प्रचलित है, न कि गहरे जाकर वैचारिक स्रोत (सत्यार्थ प्रकाश) से शुरुआत की।

बन्धुओ! इससे स्पष्ट है कि इन्टरनेट पर भी हमारी विचारधारा की कोई उपस्थिति नहीं है। महर्षि दयानन्द का जो अतुलनीय योगदान इस धरा धाम को है उसका कोई उल्लेख नहीं है। यह दोष चैट जीपीटी का नहीं है। तो आज इस पर हमें बहुत गम्भीरता से विचार करना है कि हमारा क्या कर्तव्य है? आर्य समाज के विद्वानों ने हर विषय पर खूब लिखा है परन्तु उस लिखे हुए को इन्टरनेट पर डिजिटाइज्ड फॉर्म में डालना, यह हमारा काम है ताकि हर पढ़ने-लिखने वाले को जो सही जानकारी है वह मिल सके, क्योंकि आज के युवा के लिए जानकारी का प्राथमिक और प्रामाणिक स्रोत इन्टरनेट ही है।

जब ये पंक्तियाँ लिख रहा था तभी संयोग से UPSC के विद्यार्थियों को ऑनलाइन पढ़ाने वाले एक शिक्षाविद् को सुना वे भी **1905** में स्वदेशी की अवधारणा पढ़ा रहे थे। अत्यन्त गम्भीर स्थिति है। हमारा प्रमाद है हमी को उपचार करना होगा।

इसी चिन्तन के परिणामस्वरूप एक संक्षिप्त आलेख स्वदेशी के ऊपर हमने लिखा है।

से १५० वर्ष पूर्व ऐसी सोच स्वामी दयानन्द को समकालीन विचारकों से सर्वथा पृथक् प्रतिष्ठित नहीं कर देती? जैसा हमने निवेदन किया कि स्वामी जी जहाँ जाते स्वदेशी को अपनाने का सन्देश देते थे। जोधपुर पधारे तो महाराजा जसवन्त सिंह को अपने राज्य में सुधार करने के क्रम में यह परामर्श भी दिया कि महाराज और उनकी प्रजा केवल स्वदेशी वस्त्रों का ही उपयोग किया करें। महाराजा जसवन्त सिंह ने स्वीकार भी कर लिया और महाराज स्वयं तथा उनके सब राज अधिकारी कर्मचारी व सेवक मारवाड़ में तैयार हुए कपड़े का प्रयोग करने लग गए थे।

स्वामी जी के उपदेशों से विदेशी के निषेध का वातावरण कांग्रेस के जन्म से भी पूर्व बन गया था। ऋषि का अनुसरण करते हुए आर्यसमाज भी इस आन्दोलन को अग्रसर करने में पीछे नहीं रहा। अंग्रेजी शासन भारत से कच्चा माल लेकर इंग्लैंड में माल बनाता था और महंगे दाम पर भारत में बेचता था इससे भारत की कुटीर उद्योग-व्यवस्था बर्बाद हो रही थी। इसका एक ही निदान हो सकता था कि विदेशी सामान को ग्राहक ही न मिले।

निःसंकोच कहा जा सकता है कि सर्वप्रथम आर्यसमाज ने स्वदेशी की भावना को बल प्रदान किया। आर्यसमाज के अनुयायी गाँव-गाँव में स्वदेशी की चर्चा करने लगे। जगह-जगह विदेशी वस्त्र और माल बहिष्कार की छोटी-छोटी घटनाएँ दर्ज हुईं। प्रसिद्ध अंग्रेजी समाचार पत्र स्टेट्समैन की एक रिपोर्ट जो कि १४ अगस्त १८७६ में प्रकाशित हुई के अनुसार पंडित दयानन्द सरस्वती द्वारा लाहौर में स्थापित आर्य समाज के सब सदस्यों ने आर्य समाज मंदिर में एकत्र होकर यह निर्णय किया था कि वे अंग्रेजी वस्त्रों को धारण नहीं करेंगे और केवल ऐसे वस्त्र ही प्रयोग में लेंगे जो भारत में बने हों। सम्भवतः भारत के आधुनिक इतिहास में विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और स्वदेशी कपड़े को अपनाने का यह प्रथम सामूहिक प्रयास था जिसका सम्पूर्ण श्रेय स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज को प्राप्त होता है। इस पत्र, जो कि सम्पादक के नाम लिखा गया था, का एक अंश ही हम यहाँ देंगे.....

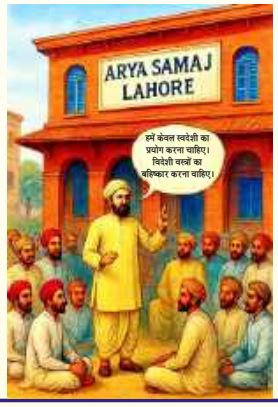

"..... no public question of such high importance and absorbing interest, as the question of the revival of our trades and industries. The action of the members of the Lahore Arya Samaj, founded by the learned Pundit Dayanand Saraswati should, therefore, be hailed with satisfaction by those who have the interest and welfare of this country

at heart. They resolved at a meeting lately held at the premises of the Arya Samaj building to abstain from the use of English cloths. Henceforward they will stick to the cloths manufactured solely in India..... This is the only way by which the influence of Manchester can be counteracted in the Indian market..... But the Manchester cloths have taken so deep a root into the Indian markets, that it will take years to uproot them..... The whole nation, like the Americans should, therefore, rise as one man and resolve not to consume English goods.

जो स्वदेशी, स्वतंत्रता आन्दोलन में केन्द्रीय भूमिका निभा रहा था, और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय जनमानस में जिसकी प्रतिष्ठा होनी थी, वैसा न हो सका। कारण? स्वतंत्रता के पश्चात् हमारे नायक ही देशी अंग्रेज बन गए तो फिर वैसा ही वातावरण बनना था। नेहरू जी के, प्रधान मंत्री पद की दौड़ में start line पर ही खड़े रह जाने के अनन्तर भी, गाँधी जी ने जब उनको प्रधानमंत्री बनाने की जिद की तो नेहरू जी के पक्ष में कहा कि "हममें से जवाहर ही एक अंग्रेज है।" तो फिर पाठकों को इसमें शंका नहीं होनी चाहिए। उल्लेख यह भी मिलता है नेहरू जी के कपड़े लन्दन या यूरोप से धुलकर और प्रेस होकर आते थे।

नेहरू जी ने इंग्लैंड के हैरो स्कूल और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (Trinity College) से शिक्षा प्राप्त की। अंग्रेजी उनकी मुख्य अभिव्यक्ति की भाषा बन गई। संसद और लेखन में वे प्रायः अंग्रेजी का ही प्रयोग करते थे। उनकी किताब Discovery of India और Glimpses of World History अंग्रेजी में ही लिखी गईं। नेहरू जी का रहन-सहन अत्यन्त अभिजात्य (elite) था। वे यूरोपीय फर्नीचर, भोजन, शराब और विलासिता की वस्तुओं के शौकीन माने जाते थे। कहा जाता है कि उनके पसंदीदा गुलाब (red rose) और विशेष फैब्रिक भी विदेश से मंगाए जाते थे। अभिजात्य परिवेश और पाश्चात्य मानसिकता। कोई आश्चर्य नहीं कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वे "पश्चिमी ढंग के भारतीय नेता" के रूप में प्रस्तुत हुए।

नए-नए स्वतन्त्र हुए भारत के निर्माण का दायित्व ऐसे हाथों को दिया गया जो भारत की आत्मा को भी पाश्चात्य चश्मे से देखते थे। भारत का एक अत्यधिक विस्तृत सांस्कृतिक इतिहास है जिसकी बुनियाद पर नए भारत का निर्माण करना था परन्तु निर्माता के हाथ उसके लिए तैयार नहीं थे। परिणाम आज का भारत है। अतः राष्ट्र को उस मनःस्थिति से निकलना होगा और इसके लिए यह आत्मसात करना होगा- "स्वदेशी की अवधारणा ही किसी भी देश की आत्मनिर्भरता का केन्द्र है।"

सौभाग्य देश का यह है कि भारत का वर्त्तमान नेतृत्व भारत की आत्मा को समझता है। आज जो जियो पोलिटिकल स्थिति बनी है उसमें अपनी स्वायत्तता और स्वाभिमान को सदा के लिए बनाए रखने के लिए जो अस्त्र है वह है आत्मनिर्भरता, जिसके लिए भारत का वर्त्तमान नेतृत्व प्राणप्रण से प्रयत्न कर रहा है। दबाव डालती वैश्विक व्यवस्थाओं के मध्य स्वदेशी ही एक मात्र आपकी ढाल है। आज जब पूरा विश्व एक वैश्विक गाँव बन चुका है वहाँ आप सबसे पृथक् भी रह नहीं सकते। यहाँ कोई किसी का स्थायी मित्र नहीं है, यह भी सत्य है। अतएव इन सब के बीच में अपने अस्तित्व को प्रखरता से स्थापित करने के लिए, अपनी सार्वभौमिकता तथा सम्मान की रक्षा के लिए सबसे आवश्यक है कि आप स्वदेशी को अपनावें और आत्मनिर्भर बनें।

हमारा मानना है कि आज भारत के प्रधानमंत्री जी भी अपने Make in India project में स्वामी दयानन्द का ही अनुसरण कर रहे हैं। तकनीक, अधिक अच्छा है स्वयं विकसित करें, आवश्यक हो तो विदेश से लें परन्तु निर्माण भारत में करें। इसी कारण अब जो रक्षा खरीद भारत कर रहा है उसमें तकनीक का हस्तान्तरण अनिवार्य बना दिया गया है। पिछले एक दशक में तकनीकी रूप से उन्नति करते हुए अनेक-अनेक क्षेत्रों में जो कार्य किए गए हैं वे अद्भुत हैं और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते हुए भारत के कदमों को रेखांकित करते हैं। यही स्वदेशी है और जब इसमें एक बार सम्पूर्णता आ जाए तो कोई विदेशी हमें आतंकित नहीं कर सकता। इसीलिए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब

हम सभी देख रहे हैं अमेरिका ने भारत के ऊपर ५०% का टैरिफ लगाया है जो कि केवल अनुचित ही नहीं, बल्कि अन्यायपूर्ण है। ऐसे में भारत के प्रधानमंत्री ने स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का नारा दिया है। हमारे इस लेख का आशय वर्त्तमान जियो पोलिटिकल परिदृश्य पर विस्तृत चर्चा करना नहीं है पर इतना अवश्य कहना चाहेंगे कि राष्ट्र का स्वाभिमान सर्वोपरि है। चाहे हमें कितने ही संकट झेलने पड़ें हमारी अस्मिता पर आंच नहीं आनी चाहिए। किसी अभाव की स्थिति में भी देश का सर नहीं झुकना चाहिए। इतिहास से एक लगभग भूले जा चुके अध्याय को हम यहाँ स्मरण कराना चाहेंगे।

१९६० के दशक की शुरुआत में भारत की जनसंख्या बढ़ रही थी, लेकिन कृषि उत्पादन अपेक्षाकृत कम था। बारिश पर निर्भर खेती, सीमित सिंचाई और पुराने कृषि साधनों के कारण भारत खाद्यान्न संकट झेल रहा था। उन दिनों अमेरिका से PL-480 योजना के तहत गेहूँ आयात भारत के लिए एक जरूरत बन गया।

अमेरिका के "Food for Peace" कार्यक्रम के अन्तर्गत विकासशील देशों को गेहूँ सस्ते दामों पर मिलता था, कई बार भुगतान रुपये में ही किया जाता था। १९६४ में लाल बहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री बने। यह वह दौर था जब भारत में अनाज की भारी कमी थी और PL-480 गेहूँ भारत की रसोई तक पहुँच राहत प्रदान कर रहा था।

६ सितम्बर १९६५ को पाकिस्तान ने अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पार कर हमला किया, जिससे भारत-पाकिस्तान का पूर्ण युद्ध शुरू हो गया। अधिक सैन्य खर्च, आर्थिक दबाव, और विदेशी सहायता पर निर्भरता बढ़ गयी।

जैसे आज दुनिया के हर भाग में आप अमेरिका की दखलअंदाजी देखते हैं तब भी यही स्थिति थी। अमेरिकी राष्ट्रपति लिंडन बी. जॉनसन ने भारत को चेतावनी दी 'अगर युद्ध जारी रखा, तो अमेरिका गेहूँ की आपूर्ति रोक देगा। आज तो भारत की परिस्थितियाँ बहुत अच्छी हैं परन्तु उन गम्भीर हालातों में भी शास्त्री जी का उत्तर पथ प्रदर्शन करता है कि एक स्वाभिमानी देश का उत्तर ऐसी स्थति में भी कैसा होना चाहिए।

लाल बहादुर शास्त्री ने अमेरिका को स्पष्ट कहा- ''अगर गेहूँ बन्द करोगे तो कर दो। भारत भूखा रहना सीखेगा, लेकिन आत्मसम्मान से समझौता नहीं करेगा।"

शास्त्री जी ने तुरन्त रेडियो सन्देश में देशवासियों से कहा 'सप्ताह में एक दिन उपवास रखें उस दिन गेहूँ का उपयोग न करें उन्होंने स्वयं भी उपवास रखा और उदाहरण प्रस्तुत किया।

सप्ताह में एक दिन के उपवास को लाखों भारतीय परिवारों ने अपनाया। इन्हीं दिनों पंजाब के लुधियाना कृषि विश्वविद्यालय में किसान मेले में शास्त्री जी ने कहा- ''देश की रक्षा और पेट भरना दोनों जरूरी हैं। सैनिक सीमा पर और किसान खेत में दोनों का योगदान बराबर है।' यहीं से नारा जन्मा- ''जय जवान, जय किसान।"

जिस प्रकार आज का नेतृत्व आपदा को अवसर बना रहा है उस समय भी कठिन चुनौतियों को स्वीकार कर हरित क्रान्ति (Green Revolution) की राह तैयार की, जिसमें उन्नत बीज, सिंचाई और खाद के उपयोग से उत्पादन बढ़ा।

स्वदेशी के साथ हमने लेख का प्रारम्भ किया था। स्वदेशी अपनाना और विदेशी का बहिष्कार करना आज भी सबसे बड़ा उपचार है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में, कई देशों में अमेरिका द्वारा लगाए गए टैरिफ के विरोध में बॉयकॉट मूवमेंट तेजी से फैल रहे हैं। कनाडा, स्कैंडिनेविया और फ्रांस-जर्मनी, स्वीडन, डेनमार्क फ्रांस आदि देशों में यह जोर पकड़ता जा रहा है। भारत में भी प्रधानमंत्री जी ने 'मेक इन इंडिया' और 'आत्म निर्भर भारत' का नारा दिया है। यही सर्वकाल में किसी भी राष्ट्र के सम्मान और सार्वभौमिकता का माध्यम है।

- अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर, चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

असली समृद्धि है अपनों का स्नेह–प्रेम

आज के जमाने में आदमी अपने स्वार्थ के पीछे इतना अंधा हो गया है कि उसे भले-बुरे, पाप-पुण्य, नीति-अनीति, धर्म-अधर्म का जरा भी ख्याल नहीं रह गया है। बस सबका एक ही मकसद है- किसी भी कीमत पर अथाह दौलत बटोर लेनी है। ऐसा आदमी अपने सगे-सम्बन्धियों तक की भी परवाह नहीं करता। अब सोचना यह होगा कि क्या ऐसी दौलत कभी हमें समृद्ध और खुशहाल बना सकती है?

इस बारे में मेरा सीधा-सा जवाब है- बिलकुल नहीं। दूसरों की हाय और बद्दुआ की बदौलत जो दौलत हासिल होती है, वह आजीवन दुःख तकलीफ ही देती है। रावण की लंका सोने की थी, मगर उसकी बुनियाद में पाप और अधर्म था, इसलिए वह विनाश को प्राप्त हुआ। इसी तरह जिसने भी गलत राह पकड़कर दौलत बटोरी हो, वह जीवित रहते तो दुःख पाता ही है, उसका अन्त भी बड़ा दुखद होता है। इसलिए इस मामले में सबको बड़ी समझदारी से काम लेना चाहिए।

जैसा कि आप सभी जानते हैं, एमडीएच कम्पनी का कारोबार आज बहुत बड़े पैमाने पर फैला हुआ है। लेकिन इसका सर्वेसर्वा होने के बावजूद मैं खुद को सिर्फ एक ट्रस्टी ही मानता हूँ। हमारे पास जो कुछ भी है, संसार की सेवा के लिए है। मैंने अपने व्यक्तिगत जीवन में कभी भी रुपये-पैसे को बहुत ज्यादा अहमियत नहीं दी, क्योंकि मेरी नजर में इसका मोल सिर्फ इतना है कि दो वक्त की रोटी, तन ढकने को कपड़ा और सिर छुपाने को छप्पर का इंतजाम हो जाता है। मेरा तो यही मानना है कि हमारी असली समृद्धि अपनों का स्नेह-प्रेम है, अटूट लगाव है।

मैं परमात्मा का शुक्रगुजार हूँ कि मुझे समृद्धि के रूप में अपनों का अपार स्नेह-प्रेम मिल रहा है, जिसके बाद और कुछ पाने की तमन्ना ही बाकी नहीं रह जाती। रुपये-पैसे से हासिल होने वाली बनावटी खुशहाली तथा इस अनोखी समृद्धि की असली खुशहाली में जमीन-आसमान का फर्क है और इसे मैं परमात्मा की अपार कृपा ही कहूँगा कि मैं ऐसी समृद्धि का हकदार बन पाया।

“मैं परमात्मा का शुक्रगुजार हूँ कि मुझे समृद्धि के रूप में अपनों का अपार स्नेह–प्रेम मिल रहा है, जिसके बाद और कुछ पाने की तमन्ना ही बाकी नहीं रह जाती।”

शुभाकांक्षी
राजीव गुलाटी
चेयरमैन- एम.डी.एच.
प्रमुख संरक्षक- श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

“न काञ्चनं न माणिक्यं न रत्नानि च भूषणम्।
स्नेह संपदयं लोके परमं धनमिष्यते।।”

क्यों फट रहे हैं– बादल?

प्रिय देशवासियो! इस समय उत्तरी भारत में आप देख रहे हैं कि अनेक स्थानों पर बाढ़ और बादल फटने की घटनाएँ हो रही हैं। उत्तराखण्ड में बादल फटने की ऐसी घटनाएँ इतनी संख्या में मेरे ध्यान में पहले कभी नहीं आईं। सामान्यतः पहाड़ों पर बादल फटते हैं, परन्तु इस बार इनकी संख्या इतनी अधिक और लगातार है कि यह कुछ असहज प्रतीत होता है।

इस बार मानसून की वर्षा अनेक प्रान्तों में सामान्य से अधिक हुई है। यहाँ हमारे जालोर जिले में भी कुछ तहसीलों को छोड़कर सामान्य से अधिक वर्षा हो चुकी है। पूर्वी राजस्थान में बाढ़ आई हुई है और वैसे बाढ़ वहाँ पहले भी आती रही है, परन्तु इस बार विशेष स्थिति देखी गई। अभी लगभग कुछ दिन पहले जब हम जयपुर गए थे, तो चारों ओर पानी ही पानी था, परन्तु खेतों में फसल नहीं थी। इसका अर्थ यह है कि वर्षा चक्र इतना बिगड़ गया है कि अनेक किसान बीज बो नहीं पाए। जिन्होंने बोया, उनकी फसल वर्षा से नष्ट हो गई। बीज व्यर्थ हो गया। उन्होंने दोबारा बोया, वह भी व्यर्थ चला गया। हमारे जालोर जिले की स्थिति भी संतोषजनक नहीं है। जहाँ बादल फटते हैं, वहाँ के हालत अत्यन्त भयावह हो जाते हैं। गाँव के गाँव बह जाते हैं, सेना के कैंप बह जाते हैं, लोग बह जाते हैं, पशु बह जाते हैं और हम इन्हें केवल प्राकृतिक आपदा मानकर बैठ जाते हैं। मौसम विभाग और वैज्ञानिकों का काम केवल इतना रह गया है कि वे चेतावनी दे देते हैं। यदि मैं 'मौसम विज्ञान' न कहकर केवल 'विज्ञान' कहूँ, तो आज विज्ञान केवल चेतावनी देने का साधन बन गया है। तकनीक भी केवल चेतावनी देने तक ही सीमित रह गई है। हाँ, यह भी एक उपलब्धि है, परन्तु क्या इस आपदा को बुलाने में विज्ञान का कोई योगदान नहीं है? क्या इसमें विज्ञान के दुरुपयोग का कोई योगदान नहीं है? क्या हमारे विकास का इसमें कोई हाथ नहीं है? इस पर हमें गम्भीरता से विचार करना होगा।

बादल समुद्र से जल लेकर ऊपर उठते हैं और जब बादल बरसते हैं, जब बादल गति करते हैं, तो उस गति और वृष्टि के पीछे विद्युत् की अनिवार्य भूमिका होती है। वैदिक विज्ञान कहता है कि बादलों के बनने और बरसने में विद्युत् की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। 'वृत्र' वह शक्ति है, जो बादलों को घेरे रहती है तथा बाँधकर रखती है और 'इन्द्र' वह शक्ति है, जो उस घेरे को तोड़कर वर्षा कराती है। यह वैदिक विज्ञान की एक सामान्य धारणा है। यही घटनाएँ ब्रह्माण्डीय स्तर पर भी घटती हैं। जब विशाल कॉस्मिक मेघों में विस्फोट होता है, तब भी यह घटनाएँ घटती हैं। इन्द्र और वृत्र का वही संघर्ष इन बादलों में भी होता है। इन दोनों के बिना न बादल बनेंगे और न वर्षा होगी, परन्तु आज इन्द्र भी प्रभावित हो रहा है और वृत्र भी प्रभावित हो रहा है। किससे प्रभावित हो रहा है? यह गम्भीरता से विचारणीय है।

इन्द्र और वृत्र का यह परस्पर इंटरेक्शन वस्तुतः विद्युत् के दो भिन्न रूपों के मध्य इंटरेक्शन है। इसका अर्थ यह हुआ कि बादलों के बनने, बरसने और फटने का सीधा सम्बन्ध विद्युत् से है। जब ये विद्युत् क्रियाएँ अस्त-व्यस्त

हो जाती हैं, चाहे वह प्राकृतिक कारणों से हों या मानवीय कारणों से, तब बादलों का बरसना, बनना और फटना असामान्य हो जाता है। आज यही प्रतीत हो रहा है।

कुछ लोगों का ऐसा भी मत है कि आज जो हार्प

(HAARP) टेक्नोलॉजी अलास्का में है, उसके बहुत बड़े-बड़े टॉवर हैं। अलास्का अमेरिका का एक भाग है। यह टेक्नोलॉजी वायुमण्डल के ऊपर स्थित आयन मण्डल को प्रभावित करती है और उसका अध्ययन करता है। इसके लिए बहुत उच्च आवृत्ति (हाई फ्रीक्वेंसी) की तरंगें भेजी जाती हैं, जो वहाँ के आयनों को डिस्टर्ब करती हैं और फिर उन डिस्टर्ब आयनों का अध्ययन किया जाता है। वह यह भी देखता है कि आयन मण्डल मौसम को कैसे प्रभावित करता है? आयन मण्डल लगभग ५० किलोमीटर से लेकर १००० कि.मी. की ऊँचाई तक माना जाता है, जबकि बादल अधिकतम ३-१६ किलोमीटर तक ही पाए जाते हैं। इस दृष्टि से बादलों और आयन मण्डल का सीधा सम्बन्ध नहीं लगता। परन्तु यदि चार्ज्ड पार्टिकल्स मौसम को प्रभावित करते हैं, तो निश्चय ही वे बादलों को भी प्रभावित करेंगे। क्योंकि मौसम में बादल भी आते हैं, चक्रवात भी आते हैं, तूफान भी आते हैं और ये सब घटनाएँ आयन मण्डल की गतिविधियों से प्रभावित हो सकती हैं।

आज अध्ययन करने वाला यह नहीं सोचता कि उसके अध्ययन का परिणाम क्या होगा? वह यह भी नहीं जानता कि उसके द्वारा निर्मित टेक्नोलॉजी से क्या दुष्परिणाम होंगे? पूरी टेक्नोलॉजी का आधार यही है कि किसी एक प्रयोग, किसी एक सुविधा या किसी एक जानकारी के लिए चाहे कितनी भी कीमत चुकानी पड़े, चाहे उसका परिणाम मृत्यु ही क्यों न हो, वह जानकारी ली जाएगी।

जब हार्प टेक्नोलॉजी से निकलने वाली उच्च आवृत्ति की तरंगें आयन मण्डल को प्रभावित करती हैं, वहाँ के आयनों को विचलित करती हैं, तो निश्चित ही उनसे मौसम भी प्रभावित होगा और यदि आयन मण्डल मौसम को प्रभावित करता है, तो डिस्टर्ब हुआ आयन मण्डल भी मौसम को अवश्य दुष्प्रभावित करेगा। इसमें कोई सन्देह नहीं है। इसीलिए कुछ लोगों का मानना है कि हार्प टेक्नोलॉजी के द्वारा शत्रु देशों को हानि पहुँचाई जा सकती है। वहाँ अतिवृष्टि कराई जा सकती है, वहाँ सूखा पैदा किया जा सकता है और कुछ लोग तो इसका सम्बन्ध भूकम्प से भी बताते हैं।

तुर्की में लगभग दो वर्ष पहले जब भूकम्प आया था, तब कुछ लोगों ने आरोप लगाया था कि अमेरिका ने हार्प टेक्नोलॉजी द्वारा कृत्रिम रूप से भूकम्प लाया, वह प्राकृतिक नहीं था। वस्तुतः भूकम्प की घटना भी विद्युत् से अछूती नहीं रह सकती। भूकम्प की घटना पृथ्वी की गति से भी अछूती नहीं रह सकती और भूकम्प की घटना पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के बीच मौजूद चुम्बकीय क्षेत्र से भी अछूती नहीं रह सकती। यदि हार्प जैसी टेक्नोलॉजी उस चुम्बकीय क्षेत्र को प्रभावित कर सकती है, तो भूकम्प भी उत्पन्न किया जा सकता है। वे भूकम्प वास्तव में लाए गए थे या नहीं, यह अलग विषय है। परन्तु यदि अलास्का से कोई दुष्ट शक्ति भारत के मौसम को डिस्टर्ब कर रही है, तो ऐसा असम्भव तो नहीं है। हम यह नहीं कहते कि यही हो रहा है, परन्तु ऐसा होना असम्भव नहीं है। और यदि ऐसा असम्भव नहीं है, तो क्या भारत सरकार, भारत के वैज्ञानिक या अन्य देशों के वैज्ञानिक इस पर विचार नहीं करेंगे कि जो टेक्नोलॉजी जलवायु और मौसम को प्रभावित कर सकती है, देशों को नष्ट कर सकती है, प्राकृतिक आपदाएँ ला सकती है, उसके प्रयोग पर प्रतिबन्ध क्यों न होना चाहिए?

आज संसार में बहुत सारे अन्तर्राष्ट्रीय नियम हैं- युद्ध के नियम हैं, परमाणु हथियारों के प्रयोग के नियम हैं और भी बहुत प्रकार के नियम हैं। परन्तु क्या इस प्रकार की टेक्नोलॉजी के लिए कोई अन्तर्राष्ट्रीय नियम है? मैं नहीं जानता। परन्तु इस पर विचार होना चाहिए।

प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं। मौसम विभाग चेतावनी दे देता है। यह वैसा ही है जैसे कोई किसी के घर में आग लगाने वाला हो और पहले से चेतावनी दे दे कि चार घंटे ध्यान रखना, आपके घर में आग लग सकती है। मैं यहाँ भारत के मौसम विज्ञान विभाग की बात नहीं कर रहा, बल्कि विज्ञान की बात कर रहा हूँ। विज्ञान चेतावनी देता है और विज्ञान ही किसी तकनीक के दुरुपयोग से आग भी लगा सकता है। विज्ञान बाढ़ की चेतावनी देता है और विज्ञान की किसी तकनीक के दुरुपयोग से बाढ़ लाई भी जा सकती है। विज्ञान किसी तकनीक से चक्रवात वा भूकम्प की चेतावनी देता है और विज्ञान की किसी तकनीक से चक्रवात और भूकम्प लाए भी जा सकते हैं। बादल फाड़े भी जा सकते हैं, लोगों को मारा भी जा सकता है। इस पर विचार हमारी सरकार को ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व को भी करना चाहिए।

आज जिस विकास की हम बात कर रहे हैं, उसमें प्राकृतिक आपदा आती है, हवाई सर्वे होते हैं, कुछ राहत कुछ लोगों तक पहुँचती है और बहुत-सी राहत अधिकारियों और कर्मचारियों यहाँ तक कि नेताओं की जेबों में भी जाती है। मैंने सरकारी नौकरी करते हुए यह स्वयं देखा है। जब अकाल पड़ता था और राहत के लिए बजट आता था, तो अधिकारी और कर्मचारी बहुत प्रसन्न होते थे, क्योंकि उन्हें भी खाने का अवसर मिल जाता था। नेता और सरपंच भी प्रसन्न होते थे, क्योंकि वे भी सब बाँटकर खाते थे। आज स्थिति और भी ज्यादा दुःखद है। इस पर मैं इससे अधिक और क्या ही कहूँ? परन्तु कहना यह चाहता हूँ कि सब अपने-अपने स्वार्थ साधने में लगे हुए हैं।

आज हमारी जितनी टेक्नोलॉजी है, वह विद्युत् पर आधारित है। चाहे रेडियो तरंगें हों, इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगें हों या कोई अन्य तरंग, सब विद्युत् के ही रूप हैं। बिना विद्युत् के हम कोई काम नहीं कर रहे। हर घर से, हर वाहन से, हर गली और गाँव से लेकर वायुमण्डल तक इलेक्ट्रोमैग्नेटिक फील्ड फैलते जा रहे हैं। ये तरंगें आयनमण्डल से ऊपर नहीं जातीं, बल्कि परावर्तित होकर वापस आ जाती हैं। सोचिए, जो तरंगें हम लगातार छोड़ रहे हैं, क्या वे आयनमण्डल को प्रभावित नहीं करेंगी? क्या वे वायुमण्डल के अणुओं और बादलों को प्रभावित नहीं करेंगी? यदि कोई कहता है कि नहीं करेंगी, तो वह विज्ञान को बिल्कुल नहीं जानता, वह महामूर्ख है और यदि जानता है कि करेंगी, तो क्या हमने कभी विचार किया कि उसका प्रभाव कहाँ तक जाएगा? वह प्रभाव इस धरती पर क्या-क्या प्रलय मचा सकता है और मचा रहा है?

बहुत वर्षा होने के बाद भी जब फसल नहीं होती, चारा और दाना नहीं मिलता, तब क्या होता है, कल्पना करिए। भूकम्प आता है, थोड़ी देर रोना-धोना होता है, थोड़ी देर सहायता मिल जाती है, फिर सब सामान्य। जो मर गए, वे मर गए और जो जीवित हैं, वे उसी तरह अन्धता में जीवन जीते रहते हैं।

आज हम सारी पृथ्वी को गर्म कर रहे हैं। बादलों में इन्द्र और वृत्र का जोड़ा है, जिनकी आपसी लड़ाई से वर्षा होती है। हमने उन दोनों को डिस्टर्ब कर दिया है। कल्पना कीजिए, दो शेर आपस में लड़ रहे हों और हम उन्हें डिस्टर्ब कर दें, तो वे आपस की लड़ाई छोड़कर हमें ही खा जाएँगे। इन्द्र और वृत्र के डिस्टर्ब होने से बादलों की वर्षा और गति दोनों प्रभावित हो रही हैं। यह हमारा निश्चित मत है। कोई वैज्ञानिक इसे समझे या न समझे, पर भविष्य में समझना ही पड़ेगा।

विज्ञान अभी बहुत कुछ नहीं जानता। वह तो यह भी नहीं जानता कि विद्युत् वास्तव में क्या है? यदि कोई जानता हो, तो उसकी परिभाषा बता दे। वह नहीं बता पाएगा। विज्ञान को अभी बहुत कुछ जानना बाकी है। जब विज्ञान तकनीक के हाथ में पड़ जाता है और तकनीक व्यापारियों व राजनेताओं की मिलीभगत में फँस जाती है, तब विकास के ऐसे सपने दिखाए जाते हैं, जो विनाशकारी होते हैं।

मैं बार-बार कहता रहा हूँ कि इस गति को रोकिए। पृथ्वी को गर्म मत करिए और जब पृथ्वी गर्म होती है, तो दोष किस पर डाला जाता है? कार्बन डाइऑक्साइड एवं मीथेन पर। कहा जाता है- लकड़ी मत जलाओ, चूल्हा

मत जलाओ, पशु मत पालो। यह एक सोची-समझी नीति है कि इस धरती से पालतू पशु नष्ट हो जाएँ, ताकि पूरी दुनिया मांसाहारी हो जाए। संसार मेरी यह बात ध्यान रखे कि मांसाहार से उत्पन्न चीत्कार और दर्द की तरंगें भी इस धरती को निरन्तर प्रभावित कर रही हैं। ये तरंगें सम्पूर्ण सृष्टि के आधार, जो आकाश का भी आधार है, उस मनसतत्त्व को कँपा रही हैं। ब्रह्माण्ड में कोई भी तरंग हो, उसमें ऊष्मा अवश्य होती है। कोई भी ऊर्जा बिना ऊष्मा के सम्भव नहीं है। चाहे चन्द्रमा की चाँदनी क्यों न हो, जिसे शीतल कहा जाता है, वह भी वास्तव में सूर्य या अन्य प्रकाश के सापेक्ष शीतल है, परन्तु उसमें ऊष्मा होती ही है।

हम जितनी ऊर्जा का उपयोग करेंगे, उतना ही हम इस धरती के वायुमण्डल और आयनमण्डल को प्रभावित करेंगे और जब आयनमण्डल प्रभावित होगा, तो मौसम भी प्रभावित होगा। यही कारण है कि हम इसी प्रकार से मरते रहेंगे।

आज मेरी बातें सुनकर कुछ लोग सरकार को दोष देंगे। मैं भी दे रहा हूँ। सरकार सपने दिखाती है और सब पागलों की तरह दौड़ पड़ते हैं। लेकिन क्या हम दोषी नहीं हैं? क्या हम ऊर्जा के उपयोग में कुछ कमी नहीं कर सकते? क्या कुछ काम हम अपने हाथों से नहीं कर सकते? क्या हम पशु नहीं पाल सकते? अगर हमें ऐसे ही जीना है, तो हमें यह विध्वंस, यह विनाश, यह आपदा सहनी ही पड़ेगी। ध्यान रहे, आगे चलकर इन आपदाओं का रूप और भी भयानक हो जाएगा। यह केवल कल्पना नहीं, बल्कि अवश्यम्भावी है।

जब किसान खेती करना छोड़ देगा, तब क्या होगा? मान लीजिए, हर बार ऐसा ही बीज बोया, खाद डाला, जुताई की, पानी बरसा; फिर बीज बोया, फिर जुताई की, पानी बरसा; दूसरी साल भी वही स्थिति। वह कब तक सहेगा? कर्ज में डूब जाएगा और उसकी जमीनें कर्ज देने वालों और बैंकों के पास चली जाएँगी। फिर वह क्या करेगा? सरकार सहायता देगी, लेकिन वह भी नोटों में नहीं, केवल आँकड़ों में। खाएगा क्या? खाद्यान्न कहाँ से आएगा? क्या हम इस धरती पर खाद्यान्न संकट बढ़ाना चाहते हैं? अगर हाँ, तो इसी तरह विकास करते रहिए। जगह-जगह पेड़ कट रहे हैं। यहाँ मारवाड़ में हजारों-लाखों पेड़ कट रहे थे। धन्यवाद है विधायक रवि सिंह भाटी का, जो अभियान चलाकर पेड़ों, गोचर और

गायों की रक्षा का प्रयास कर रहे हैं, अन्यथा यहाँ भी विनाश होता। जब किसान कृषि करना बन्द कर देगा, यही अवसर होगा कम्पनियों के द्वारा उनकी भूमि हड़पने का। उस समय वे कम्पनियाँ नाना तकनीक अपनाकर घातक खाद्यान्न उत्पन्न करेंगे। श्रमिक व किसान उसी प्रकार निराश्रित घूमेंगे, जैसे आज बेचारी गौएँ घूम रही हैं। उधार प्राकृतिक आपदाएँ अपना रौद्र रूप दिखती रहेंगी।

आजकल जितने भी नए-नए ऊर्जा के रूप आ रहे हैं, जिन्हें हम ग्रीन एनर्जी कहते हैं, वे सभी घातक हैं। चाहे सौर ऊर्जा ही क्यों न हो। मैंने एक पर्यावरण वैज्ञानिक का इन्टरव्यू सुना, जिसमें उसने कहा कि मारवाड़ २० साल में मनुष्य के रहने योग्य नहीं रहेगा, क्योंकि सौर ऊर्जा से इतनी गर्मी बढ़ जाएगी कि मनुष्य वहाँ रह ही नहीं पाएगा। इतनी गर्मी बढ़ जाएगी, तो बादलों का क्या होगा? कोई सोचने को तैयार नहीं है। सरकारें चल रही हैं, राजनीति हो रही है। पार्टियाँ आपस में लड़ रही हैं, जातियाँ आपस में लड़ रही हैं। कानून बन रहे हैं। नई-नई कारें, नई-नई बाइकें, नए-नए साधन आ रहे हैं। हमें हाथ से नल की टोंटी वा घर का दरवाजा भी न खोलना पड़े, घर में विद्युत् का कोई स्विच भी दबाने का कष्ट न करना पड़े, ऐसे सेंसर प्रयोग किए जा रहे हैं। विलासिता के नाना साधन बन रहे हैं। हम उनका उपयोग कर रहे हैं और हमें लग रहा है कि हम बहुत अच्छी दिशा में जा रहे हैं। वस्तुतः हम बहुत ही नीचे गिर गए हैं। बड़े-बड़े तथाकथित धर्मगुरु व योगी भी इसी अधोगर्त में गिर चुके हैं। तप इस धरती से कहीं अन्यत्र पलायन कर गया है। **क्रमशः .....**

- प्रमुख- वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान
(श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास द्वारा संचालित)
गाँव- भागलभीम, भीनमाल (राज.)

वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाण्ड तथा सीता की अग्निपरीक्षा

गतांक से आगे .....

रामकथा के स्रोतों के रूप में वाल्मीकीय रामायण, अध्यात्म रामायण, कम्बन रामायण और तुलसीकृत रामचरितमानस ही सर्वोपरि प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इनमें वाल्मीकि रामायण सबसे प्राचीन है। किन्तु उसमें कवियों-कथावाचकों एवं मत-मतान्तर के विरोधियों समर्थकों के इतने हस्तक्षेप हुए हैं कि आज उसकी कथावस्तु में असली-नकली का भेद करना कठिन हो गया है।

जर्मनी के भारत विद्याविद् प्रोफेसर याकोवी वाल्मीकि रामायण में उत्तरकाण्ड और बालकाण्ड को पूरी तरह प्रक्षिप्त मानते हैं। किन्तु पूरा बालकाण्ड प्रक्षिप्त नहीं हो सकता, क्योंकि अयोध्या वर्णन, राजा, मन्त्री,

पुरोहित और नागरिकों का वर्णन, पुत्रेष्टि यज्ञ, राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न का जन्म, विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण का यज्ञ की रक्षा के लिए जाना, बला और अतिबला शक्ति की प्राप्ति, ताटका वध, विश्वामित्र-यज्ञ की रक्षा, राम का विवाह और अयोध्या में प्रत्यागमन तक का वर्णन बालकाण्ड में ही वर्णित हैं। बालकाण्ड में रामकथा के अंशों का वर्णन सर्ग १-८, १३, १४, १८-३१, ६६-७३ तथा ७७ कुल ३३ सर्गों में ही समाहित हो जाता है। जबकि इस काण्ड में ८० सर्ग हैं। अतः बालकाण्ड की अधिकांश सामग्री (जो रामकथा से सीधे सम्बन्धित नहीं है) तथा सम्पूर्ण उत्तरकाण्ड का प्रक्षिप्त होना सिद्ध हो जाता है।

वाल्मीकि रामायण में बालकाण्ड के प्रथम सर्ग में जो विषय-सूची दी गई है उसमें भी उत्तरकाण्ड में वर्णित घटनाओं का उल्लेख नहीं है। युद्धकाण्ड में ही रामकथा को समाप्त कर दिया गया है। सीता निर्वासन उत्तरकाण्ड की मूल कथा है। अध्यात्म रामायण, तुलसीदास विरचित 'रामचरितमानस' एवं कम्बन-प्रणीत तमिल रामायण में भी मूल वाल्मीकि रामायण के अनुकरण पर अयोध्या में राम राज्याभिषेक तथा रामराज्य की स्थापना पर रामकथा को समाप्त कर दिया गया है। सीता के निर्वासन को सुप्रख्यात आधुनिक तमिल रामायण के लेखक चक्रवर्ती राजगोपालाचारी भी वाल्मीकि के रामचरित्र आदर्श की कसौटी पर असंगत घटना मानते हैं। अपनी रामकथा दशरथ-नन्दन श्रीराम के कथानक में उन्होंने इसे सम्मिलित नहीं किया है। वे इसे प्रक्षिप्त प्रमाणित करते हैं।

रामकथा में अतिशयोक्तिपूर्ण अमानवीय वर्णन किस प्रकार विस्तार पाता है तथा लोक में रुढ़ हो जाता है इसका दिग्दर्शन रावण के 'दशशीर्ष' (दशानन) और २० बीस भुजाओं के वर्णन में आप देख सकते हैं।

रामायण में रावण के दस शिर उसकी सबसे बड़ी विशेषता बन गये जिसके बिना हम रावण की कल्पना नहीं कर सकते। जबकि वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड के दशवें सर्ग के आठ श्लोकों (१०/१५-२२) में लगातार रावण की २ दो भुजाओं का वर्णन है। आगे रावण और सुग्रीव का युद्ध हुआ, तब रावण ने दोनों हाथों से सुग्रीव को पकड़ कर जमीन पर दे मारा-बाहुभ्यामाक्षिपत्तले (युद्धकाण्ड, ४०/१३)। मानना चाहिए कि मूलकथा में रावण के दो हाथ थे। दशग्रीव का अर्थ न समझकर परवर्ती संशोधकों ने बीस हाथ कर दिए। जहाँ तक दस शिरों की बात है, बुल्के ने लिखा था- ''रावण के दस सिर थे, हनुमान् समुद्र लांघते हैं और आकाश में उड़कर ओषधि पर्वत ले आते हैं, इस प्रकार के कथन बहुतायत से पाये जाते हैं। फिर भी रावण का केवल एक सिर था, ऐसा वर्णन भी रामायण के कई स्थलों पर मिलता है। दशग्रीव नाम पहले रूपक के रूप में प्रयुक्त हुआ होगा (दशग्रीव अर्थात् जिसकी ग्रीवा दश अन्य साधारण ग्रीवाओं के समान बलवान हो) और बाद में वस्तुतः दश ग्रीवा धारण करनेवाले प्राणी के अर्थ में लिया जाने लगा।'' (रामकथा उत्पत्ति और विकास, पृ.-६३, अनु.-११२, संस्करण-२००४)। आगे वासुदेवशरण अग्रवाल का हवाला देते हुए बुल्के ने अथर्ववेद का एक मन्त्र उद्धृत किया है-

ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो दशशीर्षो दशास्यः।
स सोमं प्रथमः पपौ स चकारारसं विषम्॥ - ४/६/१

और लिखा है- ''अथर्ववेद में एक दशास्य (दशमुख), दशशीर्ष ब्राह्मण का उल्लेख है। इसका प्रभाव भी रावण के स्वरूप की कल्पना पर पड़ा, यह असम्भव नहीं कहा जा सकता है।'' (बुल्के, रामकथा, पृ.-६३ अनु.-११२)। बुल्के के उक्त उद्धरण को देकर डॉ. रामविलास शर्मा ने 'रामकथा और डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी' शीर्षक स्वनिबन्ध में लिखते हैं- 'अथर्ववेद के मन्त्र में भी रूपक है जैसा कि मन्त्र पर सातवलेकर की पाद टिप्पणी से स्पष्ट है।' ''शीर्ष शब्द बुद्धि का और आस्य वक्तृत्व का वाचक है। दस गुणा बुद्धिमान् और दस गुणा विद्वान्, यह इस शब्द का भाव है।'' इस तरह के रूपकों की शुरूआत होती है ऋग्वेद के **'सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्'** (ऋग्वेद १०/९०/१) आदि से। कुछ पौराणिकों ने रूपक का भाव न लेकर उसे तथ्यों का विवरण मान लिया। ''ऐसे ही विद्वानों ने रावण के एक सिर के दस सिर कर दिये, दो हाथों की जगह बीस हाथ कर दिये।'' (रामविलास शर्मा, भारतीय साहित्य की भूमिका, पृ.-३८४-८५, राजकमल प्रकाशन, संस्करण-२००६ ई.)।

प्रक्षेपों की चर्चा केवल आधुनिक काल में ही हुई है ऐसा नहीं है। वेदान्त दर्शन के द्वैतवाद के प्रवर्त्तक मध्वाचार्य (जन्म-११९९ ई.) का अपरनाम 'आनन्दतीर्थ' भी है। इन्होंने वेदान्त पर अपना 'पूर्णप्रज्ञ' नाम से भाष्य लिखा है। इनका एक दूसरा प्रसिद्ध ग्रन्थ महाभारत-तात्पर्य-निर्णय है। इसमें ये लिखते हैं-

क्वचिद् ग्रंथान् प्रक्षिपन्ति क्वचिदन्तरितानपि।
कुर्युः क्वचिच्चव्यत्यासं प्रमादात् क्वचिदन्यथा॥ ३॥ अनुत्सन्ना अपि ग्रन्था व्याकुला इति सर्वशः।
उत्सन्नाः प्रायशः सर्वे कोट्यंशोऽपि न वर्त्तते॥
४११ (२/३-४)॥

इसका अर्थ यह है कि ''प्रक्षेपकर्त्ता केवल नवीन श्लोक बनाकर मूलग्रन्थ में प्रक्षेप ही नहीं करते, अपितु अनेक मूल श्लोकों (पाठों) को निकाल भी देते हैं। कहीं-कहीं मूल श्लोकों (पाठों) के कतिपय अंश मात्र का ही परिवर्तन कर उसके स्थान में स्वनिर्मित पाठ मिला देते हैं। इस प्रकार प्राचीन ग्रन्थकारों की कृतियों में बहुत ही व्यत्यास (उल्टा-पुल्टा या विपर्यय) हो गया है।'' इसी का परिणाम यह है कि रामायण तथा महाभारत की मूलकथा में अनैतिहासिक और प्रत्यक्षादिप्रमाणों तथा सृष्टिक्रम के विरुद्ध असम्भव घटनाओं और इतिवृत्तों का बाहुल्य हो गया है। जिसके कारण अनेक विद्वान् रामायण और महाभारत की कथा को कवि-कल्पित कथा के रूप में देखते हैं।

रामायण के विभिन्न संस्करण

१. पश्चिमी संस्करण निर्णय सागर प्रेस (१८८८ ई०) और गुजराती प्रिन्टिंग प्रेस (१९१२-१९२०) से यह संस्करण प्रकाशित हुआ है। यह वाल्मीकीय रामायण के दाक्षिणात्य पाठ का प्रतिनिधित्व करता है। यह पाठ अपेक्षाकृत अधिक प्रचलित और व्यापक है।

२. पूर्वोत्तरीय संस्करण (बंगीय संस्करण)- इसको गैस्पर गौरेशियो (पैरिस) ने सम्पादित तथा प्रकाशित किया था। इसे गौडीय संस्करण भी कहते हैं। कलकत्ता सिरीज संस्करण से यही पाठ प्रकाशित हुआ था।

३. पश्चिमोत्तरीय संस्करण-इसे डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर से पं. भगवद्दत्त, पं. रामलभाया तथा पं. विश्वबन्धु शास्त्री ने सम्पादित कर प्रकाशित कराया था।

४. आलोचनात्मक संस्करण (Critical Edition)- इसे बडोदरा (Baroda) के महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के 'ओरियण्टल इंस्टीट्यूट के विद्वानों ने दो सहस्र पाण्डुलिपियों के आधार पर शोध करके १९६० से १९७५ पर्यन्त वाल्मीकि रामायण के सात काण्ड सात भागों में प्रकाशित किया है। इसे 'समीक्षित आवृत्ति' कहा जा सकता है।

वाल्मीकि रामायण के प्रचलित संस्करणों में ७ सात काण्ड, ६४५ सर्ग तथा २४, ०४९ श्लोक प्राप्त होते हैं। बड़ौदा के ओरियण्टल इंस्टीट्यूट द्वारा प्रकाशित आलोचनात्मक संस्करण में ७ सात काण्ड, ६०६ सर्ग तथा १८, ७६६ श्लोक प्रकाशित किये गये हैं।

ईसा की तीसरी शती उत्तरार्द्ध की रचना अभिधर्म महाविभाषा में रामायण का उल्लेख है, जिसमें यह लिखा है कि 'रामायण' नामक ग्रन्थ में १२००० बारह हजार श्लोक हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि ईसा की तीसरी शती में रामायण का कलेवर आजकल प्रचलित रामायण का आधा था तब 'आदि रामायण' (वाल्मीकि) में मूल श्लोकों की संख्या और भी कम (न्यून) रही होगी। २०२१ ई. में श्रीमद् वाल्मीकीय रामायणम् (शोधितम्) के संस्कर्त्ता और सम्पादक श्री निरंजनलाल मांगल ने वाल्मीकीय रामायण में मूल श्लोकों की संख्या-३६०७ तीन हजार छहः सौ सात निर्धारित किया है और तदनुसार प्रकाशित भी किया है। इनकी अवधारणा है कि युद्धकाण्ड ही उत्तरकाण्ड है, पृथक् रूप में उत्तरकाण्ड नहीं है। इस प्रकार ६ छहः काण्ड, प्रति काण्ड में २४ चौबीस सर्ग तथा प्रति सर्ग २४ चौबीस श्लोक हैं। इनके इस मनोरम निष्कर्ष के लिए द्रष्टव्य है- इनके द्वारा प्रकाशित 'वाल्मीकीय रामायणम् की भूमिका संस्कृत भाषा में तथा अंग्रेजी में Preface For English तथा परिशिष्टम्-७। (प्रकाशक-दिव्य प्रकाशन, दिव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, कृपालु बाग आश्रम, कनखल, हरिद्वार-२४६-४०८, उत्तराखण्ड)।

रामायण के शोधपूर्ण प्रस्तुतीकरण के अनेक प्रयास पूर्व में हुए हैं। प्रतिष्ठित प्रकाशकों तथा लेखकों ने 'संक्षिप्त रामायणम्' छापे हैं। आर्य समाज के क्षेत्र में ब्रह्मचारी अखिलानन्द ने सम्पूर्ण रामायण को प्रचलित पाठ के अनुरूप छापते हुए भी स्वमन्तव्यानुसार प्रक्षिप्त श्लोक और उसके अर्थ भी भिन्न टाइप में प्रकाशित किए हैं। महामहोपाध्याय आर्यमुनिजी कृत 'रामायणार्य्य भाष्य' (दो भाग) की आर्य समाज की पहली पीढ़ी में अच्छी खासी चर्चा थी। श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी की रामायण टीका अपने ही ढंग की निराली थी।

पंडित प्रेमचन्द्र शास्त्री विद्याभास्कर द्वारा सम्पादित 'वाल्मीकि रामायण' को प्रका. गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली ने प्रक्षिप्तांश रहित तथा अर्थ सहित धारावाही संस्करण प्रकाशित किया था। स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती ने भी प्रक्षेप रहित रामायण को पठनीय तथा रोचक बनाने का सत्प्रयास किया। किन्तु उनके द्वारा पाठ का निर्धारण और उसके पौर्वापर्य में स्वेच्छाचारिता का आश्रय लिया गया जो विद्वज्जन मनोरम नहीं है। ईश्वरीप्रसाद 'प्रेम' द्वारा प्रस्तुत

हिन्दी भाषा में 'शुद्ध रामायण', 'शुद्ध हनुमच्चरित' भी आर्य जगत् में बहु प्रशंसित हैं। रामायण को आधार बनाकर छोटी-बड़ी अनेक पुस्तकें आर्य विद्वानों नें प्रकाशित की हैं। जिनमें स्वामी ब्रह्ममुनि की 'रामायण दर्पण' तथा स्वामी जगदीश्वरानन्द की 'मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम' पुस्तक का प्रचार-प्रसार अधिक हुआ। शास्त्रार्थ महारथी ठाकुर अमर सिंह (महात्मा अमर स्वामी परिव्राजक) द्वारा रचित 'रामायण दर्पण' (रामायण सम्बन्धी भ्रमों का निवारण) भी आर्यसमाज के क्षेत्र में बहुपठित तथा बहुप्रशंसित है। इसी सन्दर्भ में रामायण सन्दर्शिका संस्कृत साहित्य के एक तरुण विद्वान् श्री यशपाल जी के गहन अध्ययन तथा शोध-दृष्टि का सुपरिणाम है। अनेक आर्य लेखकों ने रामायण के विभिन्न पात्रों तथा विशिष्ट घटनाओं के सन्दर्भ में लोक प्रचलित अवधारणाओं का निरसन करते हुए उसका सटीक सयुक्तिक तर्क-प्रमाण-पुरस्सर समाधान प्रस्तुत किया है। किन्तु इस युवा अधीती ने रामायण के विभिन्न संस्करणों तथा अनेकविध पाठों के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से यथार्थ वस्तुस्थिति प्रस्तुत की है। इस नूतन ग्रन्थ से रामायण विषयक साहित्य में श्रीवृद्धि होगी तथा रामायण के रसिक-जनों को आनन्द की प्राप्ति भी।

सदूषणापि निर्दोषा सखरापि सुकोमला।
नमस्तस्मै कृता येन रम्या
रामायणीकथा।। (त्रिविक्रमभट्ट-नलचम्पू)

लेखक- डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री
चलभाष- 7303474301

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर, श्री अरुण अब्रोल; मुम्बई

जन्म जयन्ती पर विशेष

सबसे कम उम्र का शहीद
बाजी राउत

बाजी राउत जो धेन्कनाल के एक गाँव में रहता था एक बहुत ही हिम्मती बच्चा था। वह नाव चलाता था और अपने काम में लगा रहता था। उस समय जब देश में आजादी की लड़ाई चल रही थी, लोग अंग्रेज़ों के खिलाफ लड़ रहे थे यह बात १९४२ की है जब भारत छोड़ो आंदोलन जोर पकड़ रहा था। उस दिन रात का समय था कुछ क्रांतिकारी जिन्हें प्रजामंडल आंदोलन के लोग भी कहा जाता था वे आए। वे अंग्रेज़ों के अधिकारियों के खिलाफ थे और उनके काम को रोकना चाहते थे। उन्होंने बाजी से कहा कि उन्हें ब्राह्मणी नदी पार करा दो क्योंकि दूसरी तरफ अंग्रेज़ों के अधिकारी और उनके सैनिक उनका पीछा कर रहे थे। बाजी को पता था कि यह एक खतरनाक काम है पर उसने हिम्मत नहीं हारी। तभी अंग्रेज़ों की सेना वहाँ पहुँच गई उन्होंने अपने सैनिकों से कहा कि वे नाव को वहीं रोक दें ताकि क्रांतिकारी भाग न सकें अंग्रेज़ों ने बाजी को धमकाया और कहा कि- अगर उसने नाव चलाई तो वे उसे गोली मार देंगे। लेकिन बाजी डरा नहीं, उसने अपनी आँखों में हिम्मत भरकर कहा- ''मैं अपने भाई-बहनों को धोखा नहीं दूँगा। तुम मुझे गोली मार सकते हो पर मैं नाव नहीं रोकूँगा।'' इस पर उन अधिकारियों ने बाजी पर गोली चला दी बाजी वहीं शहीद हो गया। लेकिन उसकी बहादुरी ने उन क्रान्तिकारियों को बचा लिया वे नदी पार करने में सफल रहे और अंग्रेज़ों के अधिकारियों के हाथ नहीं आए। बाजी राउत उस आन्दोलन का सबसे छोटा शहीद था उसके बलिदान ने यह साबित कर दिया कि देशभक्ति के लिए उम्र का कोई मतलब नहीं होता। एक छोटे से बच्चे की बहादुरी ने एक बड़े आन्दोलन को आगे बढ़ाया।

१४ वर्षीय वीर बालक बाजी राउत खिलौनों और खेलों की उम्र में भी देश की रक्षा हेतु अडिग प्रहरी बनकर खड़ा रहा। उसने मातृभूमि को सर्वोपरि मानते हुए हँसते-हँसते अपने प्राणों की आहुति दे दी। नन्हीं कली होते हुए भी उसमें वटवृक्ष सा साहस और अडिग संकल्प था। उसकी अमर शहादत सदैव हमें यह स्मरण कराती है कि देशप्रेम उम्र का मोहताज नहीं होता।

- सिद्धम आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

दूसरों की ईर्ष्या प्रमाण है कि आप सचमुच अच्छी स्थिति में हैं

कई बार ऐसा होता है कि जब आप अपने किसी मित्र, रिश्तेदार अथवा परिचित से मिलते हैं अथवा मिलने जाते हैं तो आपको पहले जैसे आदर-सत्कार, सम्मान अथवा स्नेह की बजाय उपेक्षा और तिरस्कार मिलता है। कल तक जो लोग आपकी तरफ पूरा ध्यान देते थे, आपकी पसन्द-नापसन्द का खयाल रखते थे और आपकी प्रशंसा करते नहीं थकते थे वे ही एकाएक आपमें कमियाँ निकालना तथा आपकी उपेक्षा और तिरस्कार करना प्रारम्भ कर देते हैं जबकि आपने ऐसा कोई काम नहीं किया जो उनकी प्रतिष्ठा के विरुद्ध हो। ऐसे में आपका दुखी, उत्तेजित अथवा परेशान होना स्वाभाविक है लेकिन ऐसा करने से पहले जरा इसके कारणों पर विचार कीजिए।

कल तक जो मित्र आपके 'सेंस ऑफ ह्यूमर' अथवा आपकी 'ड्रेस सेंस' की प्रशंसा करते थकते नहीं थे आज आपको बत्तमीज और फूहड़ साबित करने पर तुले हुए हैं तो इसका कोई कारण तो होगा ही और वो कारण है आपके व्यक्तित्व का अपेक्षाकृत अधिक प्रभावशाली होना अथवा आपकी प्रसन्नता के स्तर में वृद्धि होना लेकिन उनके इस अप्रत्याशित व्यवहार से आपको दुख तो होगा ही। हो सकता है आपको क्रोध भी आ जाए लेकिन आपको क्रोध करने अथवा दुखी होने की जरूरत नहीं है। वास्तविकता यही है कि लोग हमारी खुशियों के हमेशा खिलाफ ही होते हैं। यही कटु सत्य है कि प्रायः अधिकतर लोग दूसरों को प्रसन्न देखना नहीं चाहते। किसी अन्य की प्रसन्नता कुछ लोगों को कभी बरदाश्त नहीं होती। हाँ अगर आप दुखी हैं तो उन्हें कोई परेशानी नहीं होती। उर्दू शायर डॉ. नवाज देवबन्दी साहब का एक शेर है-

वो जो मेरे ग़म में शरीक था,
जिसे मेरा ग़म भी अज़ीज़ था,
मैं जो ख़ुश हुआ तो पता चला
वो मेरी ख़ुशी के ख़िलाफ़ है।

लेकिन उपेक्षा, अपमान अथवा तिरस्कार की यह स्थिति आपके लिए दुखी नहीं प्रसन्न होने के लिए है क्योंकि लोगों के इस प्रकार के व्यवहार से साफ पता चलता है इस समय आप इतनी अच्छी स्थिति में हैं कि लोगों को आपसे ईर्ष्या हो रही है। इस समय आप वास्तव में प्रसन्नचित्त अथवा खुशहाल हैं जिसके कारण कुछ लोग आपसे दुखी होकर आपकी उपेक्षा करने अथवा आपको कमतर सिद्ध करने के प्रयास में हैं। कुछ लोग हमेशा सुन्दर, सुशील, प्रसन्नवदना, खुले हृदय और उन्मुक्त विचारों वाली महिलाओं में चारित्रिक दोष ढूँढ़ने के प्रयास में ही लगे रहते हैं। वास्तव में दुर्बल चरित्र वाले लोगों को इससे अधिक कुछ आता ही नहीं। जो व्यक्ति जिन दुर्गुणों से युक्त होते हैं वे उन्हें दूसरों में देखना और उन पर आरोपित करना चाहते हैं। अब ऐसे ईर्ष्यालु व्यक्तियों से भला एक अच्छे व्यक्ति का क्या मुकाबला लेकिन दूसरे लोगों की ईर्ष्या इस बात का प्रमाण है कि आप सचमुच आनन्दित हैं। वे लोग यही चाहते हैं कि इनके व्यवहार से आहत होकर आप किसी तरह इस आनन्द से वंचित हो जाएँ। ये हम पर निर्भर करता है कि हम इस षड्यंत्र के शिकार होते हैं अथवा नहीं।

यदि आप ईमानदार, अनुशासनप्रिय और नियमों का पालन करने वाले हैं तो बेईमान, अनुशासनहीन तथा नियम तोड़ने वाले लोग अवश्य ही आपको नीचा दिखाने का कोई अवसर अपने हाथ से नहीं जाने देंगे। यदि आप लोगों की सहायता करने वाले, उन्हें अच्छे काम के लिए

प्रोत्साहित करने वाले अथवा दो पक्षों का झगड़ा निपटवाने वाले हैं तो दूसरों की टाँग खींचने वाले तमाशबीन किस्म के लोग अवश्य ही आपके शत्रु हो जाएँगे और आपको अपमानित करने का कोई भी अवसर हाथ से नहीं जाने देंगे। लेकिन आप सद्गुणों के स्वामी हैं अतः इन अमूल्य जीवन निधियों और जीवन-मूल्यों को खिसकने मत दीजिए। यदि लोग आपमें बिना वजह कमियाँ निकालने का प्रयास करते हैं तो ये आपके लिए सचमुच अच्छी बात है।

लोग दुख में आपके साथ हो सकते हैं लेकिन आपकी खुशी बरदाश्त नहीं कर सकते, यही सच्चाई है। सभी लोग तो ऐसे नहीं होते लेकिन अधिकतर लोग ऐसे ही होते हैं इसमें सन्देह नहीं। लोग तो ऐसे ही होते हैं लेकिन अब आपकी बारी है। आप प्रसन्न रहना चाहते हैं अथवा प्रसन्नता से वंचित होना चाहते हैं। वास्तविकता ये है कि जो लोग दूसरों की समृद्धि देख कर आनन्दित होते हैं उन्हें स्वयं समृद्ध होते देर नहीं लगती। विद्वान् ही विद्वानों का आदर करते हैं, उनकी संगति से लाभान्वित होते हैं। जो प्रभावशाली व्यक्तित्व से सम्पन्न व्यक्तियों को देखकर उनके गुणों की प्रशंसा करते हैं, उन्हें उचित ठहराते हैं एक दिन स्वयं भी प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी बन जाते हैं।

यदि कोई व्यक्ति विशेष निरन्तर किसी व्यक्ति की उपेक्षा कर रहा है अथवा अपमानित करने का मौका तलाश रहा है तो इसमें दो बातें हो सकती हैं। जिस व्यक्ति की उपेक्षा की जा रही है या तो वह है ही उपेक्षा और तिरस्कार के योग्य अन्यथा वह उपेक्षा और तिरस्कार करने वाले व्यक्ति से आगे बढ़ रहा है, उन्नति कर रहा है, इसमें सन्देह नहीं। अब यह उन्नति किसी भी प्रकार की हो सकती है। यह आर्थिक उन्नति भी हो सकती है और बौद्धिक उन्नति अथवा विकास भी। कई लोगों की सोच अत्यन्त सकारात्मक होती है इसलिए नकारात्मक सोच रखने वाले व्यक्ति कभी उनके साथ उचित व्यवहार नहीं कर सकते।

यदि आपके किन्हीं गुणों के कारण आपका व्यक्तित्व विकसित होकर प्रभावशाली हो रहा है, आपमें सद्गुणों की वृद्धि हो रही है तो यह बात भी निश्चित है कि जो लोग इन गुणों से वंचित या कमजोर हैं आपकी उपेक्षा करेंगे ही लेकिन ऐसे में उनको मुँह तोड़ जवाब देना स्वयं के विकास को अवरुद्ध करना है। यद्यपि आपकी उपेक्षा करके आपको कमजोर करने का प्रयास अवश्य किया जा रहा है लेकिन यदि आप किसी भी प्रकार से कोई नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं करते हैं तो स्वाभाविक है आपकी स्थिति कमजोर नहीं होगी।

आपकी स्थिति अपेक्षाकृत सुदृढ़ है जिसे किसी प्रकार की चुनौती नहीं दी जा सकती। हाँ, यदि आपमें कुछ कमियाँ हैं, आपके गलत व्यवहार, गलत आदतों अथवा दुर्व्यसनों की वजह से आपकी उपेक्षा की जा रही है तो आपको अपना पुनर्मूल्यांकन करके स्वयं को दोषमुक्त करने की जरूरत है न कि बुरा मानने अथवा क्रोध करने की। और यदि बेवजह आपकी उपेक्षा की जा रही है तो आपको दुखी नहीं खुश होना चाहिए। आपकी उपेक्षा की वजह है आपकी वर्तमान स्थिति से ईर्ष्या होना।

यदि आप क्रोध करते हैं अथवा उपेक्षा का जवाब उपेक्षा से देते हैं या अन्य किसी भी प्रकार से ईंट का जवाब पत्थर से देने का प्रयास करते हैं तो सम्भव है आप इसमें सफल हो जाएँ लेकिन इस प्रयास में आपमें अनेकानेक अवगुणों का आना तथा आपका अपनी स्थिति से नीचे गिरना भी अवश्यंभावी है। यदि आप उपेक्षा अथवा अपमान को सहन कर लेते हैं तो आप में धैर्य, सहिष्णुता और क्षमा जैसे अद्भुत गुणों का अतिरिक्त समावेश भी हो जाता है जो एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इन गुणों से तो अन्ततः विरोधी व शत्रु भी मित्र हो जाते हैं।

– सीताराम गुप्ता
ए. डी. १०६ सी., पीतमपुरा, दिल्ली – ११००३४

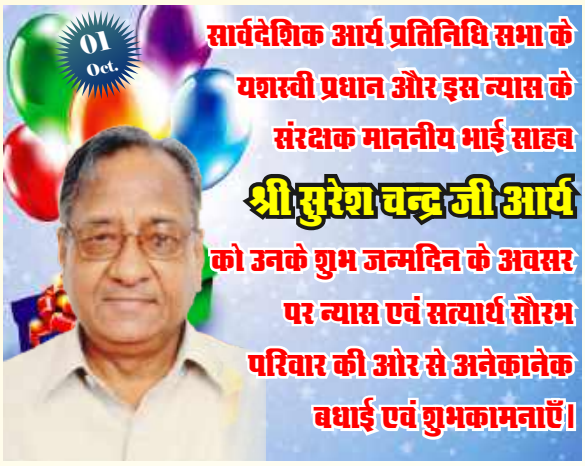

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा 80 जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | डॉ. अमृत लाल तापड़िया, संयुक्तमंत्री-न्यास

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों में से अनेकों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

जीवन की पवित्रता हेतु यज्ञ

गतांक से आगे .....

इस प्रकार यज्ञ बाहरी प्रदूषण दूर कर स्वच्छता करता है। वहीं यह आत्मशुद्धि, दान की भावना और परोपकार का भी सूत्र है । जीवन पवित्र करने का सर्वोत्तम माध्यम है। योगीराज भगवान ने बताया कृष्ण - **कार्य मेव तत्।**

यज्ञदानतपः कर्म, न त्याज्यं कार्यमेव तत्। यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम् ।। - गीता १८/५

यज्ञ, दान, तप रूप कर्म का त्याग नहीं करना चाहिए, उनको करना ही चाहिए क्योंकि यज्ञ, दान, तप मनीषियों को पवित्र करता है। त्याग, दान की भावना का सन्देश देता है यज्ञ से स्वार्थ कम और उससे अधिक परमार्थ अधिक होता है, पर्यावरण शुद्ध होता है। इसलिए कि यह हमारी बाहरी और आन्तरिक शुद्धि करता है। यज्ञ से दान, देवपूजा और संगतिकरण ये तीन लाभ होते हैं। यज्ञ करने वाला यज्ञ करते समय अपना समय, परिश्रम और धन लगाकर यज्ञ करता है किन्तु मन्त्र के पश्चात् 'इदन्न मम्' अर्थात् यह मेरा नहीं है कहता है। यज्ञ से होने वाले लाभ को अपने तक सीमित नहीं रखता, सबके लिए प्रार्थना करता है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का सन्देश यज्ञ देता है। यज्ञ समाज के लिए गुप्त दान जैसा है। लगाव, आसक्ति, बन्धन और दुःखों का कारण है। शास्त्र में कहा है-

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।
बन्धाय विषयासक्तं मुक्त्यै निर्विषयं स्मृतम्।।

अर्थात् मनुष्य का मन ही बन्धन और मुक्ति का माध्यम है। लगाव, लिप्तता, बन्धन और त्याग मुक्ति (मोक्ष) का मार्ग है ।

धर्म की पहली सीढ़ी यज्ञ

धर्म को मानना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है। धर्म के तीन स्तम्भों में पहला है **'यज्ञोऽध्ययनम दानमिति'** यज्ञ, अध्ययन और दान ये धर्म के प्रमुख तीन अंग बताए।

जो व्यक्ति यज्ञ के बिना भोजन करता है उसे पापी मनुष्य कहा गया है। संसार के सारे कर्म बन्धन में डालने वाले हैं। सारे बन्धनों से मुक्त कर्म यदि कोई है तो वह यज्ञ है, ऐसा ही योगीराज श्रीकृष्ण चन्द्र जी ने कहा ।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसंगः समाचर।। - गीता ३/९

दोनों लोकों की प्राप्ति का माध्यम यज्ञ होगा, बताते हुए योगीराज कहते हैं-

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्।
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम।।

- गीता ४/३१

यज्ञ से बचे भोजन को प्राप्त करके योगी ईश्वर को

प्राप्त करते हैं। यज्ञ न करने वाले मनुष्य के लिए यह लोक भी सुखदायक नहीं तो वह लोक कैसे सुखदायक हो सकता है।

'नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम' अर्थात् हे अर्जुन जो यज्ञ नहीं करता उसे यह लोक प्राप्त नहीं होता, परलोक क्या होगा?

योगीराज श्रीकृष्ण गीता के तीसरे अध्याय के १३वें श्लोक में सन्देश देते हैं- यज्ञ अर्थात् परमार्थ त्यागकर जो केवल अपने स्वार्थ के लिए दिनरात भाग-दौड़ करते हैं, दूसरों के लिए कल्याण, उपकार की भावना जिनमें नहीं होती, वे पापी हैं और वे पाप को ही खा रहे हैं।

तस्मात् सर्वगतं ब्रह्म नित्ये यज्ञे प्रतिष्ठितम्।- गीता ३ /१५

ब्रह्मसर्व व्यापक है परन्तु यज्ञ में साक्षात् उपस्थित है।

यज्ञाद् भवति पर्जन्यो। यज्ञ से वर्षा होती है। (गीता ३/१४)- महाभारत में यज्ञ के महत्व को बताते हुए कहा **'नास्ति यज्ञ सममू दानं'** यज्ञ के समान कोई दान नहीं ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं 'प्रत्येक मनुष्य इस सृष्टि को किसी न किसी प्रकार से नित्य प्रदूषित करता है। इसलिए कम से कम १६ आहुति का यज्ञ प्रतिदिन प्रातः-सायंकाल उसके द्वारा किए गए प्रदूषण को दूर करने के लिए करना चाहिए।' महाभारत के शान्ति पर्व में यज्ञ के सम्बन्ध में बडी महत्वपूर्ण बात कही है।

यज्ञाय सृष्टानि धनानि धात्रा यष्टा आदिष्टः पुरुषो रक्षिता च। तस्मात् सर्वम् यज्ञ एव उपयुज् धनम् ततो ऽनन्तर एव कामः।। - महा. १२/८/५

अर्थात् संसार के रचयिता ने यज्ञ करने के लिए ही धनों की-सृष्टि की है। यज्ञ रक्षा के लिए पुरुष को किया है इसलिए यज्ञार्थ- ही धन का उपयोग करना चाहिए ।

यज्ञ से यजमान की सब कामनाएँ पूर्ण होती हैं। इसी बात को सत्य सनातन वेद ज्ञान में भी कुछ ऐसे बताया-

यज्ञ में गौ घृत, आम, पीपल, बड़, पलास, गूलर आदि। (जिन वृक्षों में दूध होता है) की समिधा (लकड़ी) तथा स्वच्छ सुगन्धित हवन सामग्री से करने का विधान है।

जब तक हमारा जीवन सनातन संस्कृति के मूलभूत आदर्शों, सिद्धान्तों के अनुसार था मानव जाति यज्ञ करती थी तब तक दिनचर्या व्यवस्थित थी, मनुष्य स्वस्थ व दीर्घायु होते थे, सुख शान्ति आपसी सम्बन्ध मधुर होते थे। परिवार व समाज में एक खुशनुमा वातावरण छाया रहता था। यह सब उस समय तक था जब तक हमारे घरों में यज्ञ होते थे।

भगवान कृष्णचन्द्रजी गीता में कहते हैं -

तस्मात् सर्वगतं ब्रह्म यज्ञे प्रतिष्ठितम्। - गीता. ३/१५

ब्रह्म सर्वव्यापक है किन्तु यज्ञ में साक्षात् उपस्थित है।

योगीराज पुनः कहते हैं-

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।।
- गीता ३/१०

परमात्मा ने भी प्राचीनकाल में प्राणियों को यज्ञ की भावना से उत्पन्न किया और कहा तुम भी यज्ञ की भावना से संसार सूत्र को चलाओ। यज्ञ की भावना वाला कर्म तुम्हारी सब इच्छा पूर्ण करेगा। अनेक प्रयोजनों के लिए, अनेक कामनाओं की पूर्ति के लिए, अनेक विधानों के साथ, अनेक विशिष्ट यज्ञ भी किये जा सकते हैं। दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ करके चार उत्कृष्ट सन्तानें प्राप्त की थीं। विश्वामित्र आदि ऋषि प्राचीनकाल में असुरता निवारण के लिए बड़े-बड़े यज्ञ करते थे। राम-लक्ष्मण को ऐसे ही यज्ञ की रक्षा के लिए स्वयं वन जाना पड़ा था। लंका युद्ध के बाद राम ने दस अश्वमेघ यज्ञ किये थे। महाभारत के पश्चात् कृष्ण ने भी पाण्डवों से एक महायज्ञ कराया था, उनका उद्देश्य युद्धजन्य विक्षोभ से क्षुब्ध वातावरण की असुरता का समाधान करना ही था।

जब कभी आकाश के वातावरण में असुरता की मात्रा बढ़ जाए तो उसका उपचार यज्ञ प्रयोजनों से बढ़कर और कुछ हो नहीं सकता। यज्ञ मात्र एक आध्यात्मिक प्रक्रिया ही नहीं अपितु वैज्ञानिक दृष्टि से भी अत्यन्त

लाभकारी है।

सरय्वाश्च उत्तरे तीरे यज्ञ भूमिर्विधीयताम्।

– वाल्मिक रामायण ६/३

महाराज दशरथ जी ने यज्ञ करने का निश्चय करके सरयू के उत्तर तट पर यज्ञ के लिए भूमि तैयार करने का आदेश दिया।

अथर्वशिरसि इष्टिं ते अहं कारयिष्यामि।

– वाल्मिक रामायण ८/४

शृंगी ऋषि बोले, राजन् मैं अथर्ववेद के मन्त्रों से पुत्रेष्टि यज्ञ कराऊँगा।

श्रंगी रिषिहि बसिष्ठ बोलावा।
पुत्र कामसुभ जग्य करावा।। – बाल. दो. १८८

सिख सम्प्रदाय में यज्ञ- **तित धोरा होम जदा सत पूजा पइयै कारण सो है।** (वार माफ म.गु.ग्र. साहिब)

हिवना ना हिन्द में भूल पाता, फूलते नहीं निशान
आज हिन्दुस्तान को कहत,
हरनामसिंह इसे न झूठ जानो।
तीर जो छूटते गुरू गोविन्दसिंह जवान के।

यदि गोविन्दसिंह के तीर न छूटते यज्ञ होम न होता तो हिन्दुस्तान के फलने फूलने के चिह्न नहीं दिखते। यज्ञ काल में उच्चारित वेद मन्त्रों की पुनीत शब्द ध्वनि आकाश में व्याप्त होकर लोगों के अन्तःकरण को सात्विक एवं शुद्ध बनाती है। धर्मप्रिय भाई बहन इस पर विचार करें, जिस पवित्र कर्म को हमारी सनातन संस्कृति में, धर्मग्रन्थों में, योगीराज भगवान श्री कृष्णचन्द्रजी ने, भगवान श्री रामचन्द्रजी ने और अनेक महापुरुषों ने श्रेष्ठ कर्म बताया उसे हम क्यों नहीं मानें? अथर्ववेद में ही कहा गया **'होतृषदनं हरितं हिरण्यम्।'** अर्थात् यज्ञ करने वाले का घर अत्यन्त मनोहर धनधान्य से पूर्ण हितकर और रमणीय होता है। यज्ञ से जीवन की आवश्यकताओं का अभाव मिट जाता है। इस यज्ञ (होम) की महिमा को वेद में बताते हुए कहा-

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय।
आयुः प्राणं प्रजा पशुं कीर्तिं यजमानं च वर्धय।।

– अथर्व. १६/६३/१

हे वेदरक्षक परमात्मन! देवों विद्वानों को यज्ञ के द्वारा बोध कराइये व वेद ज्ञान द्वारा जगाइये और यज्ञ करने वालों को दीर्घायु, आत्मबल, सुसन्तान, गौआदि पशु, कीर्ति आदि से बढ़ाओ। सनातन धर्म के आधार चार वेद- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद, ईश्वरीय ज्ञान हैं जिसे सर्वव्यापक, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्त्ता ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को दिया था। ईश्वर प्रदत्त यह ज्ञान सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद सभी मनुष्यों के लिए यज्ञ करने का विधान करते हैं।

ऋग्वेद के मन्त्र १/१३/१२ में बताया **'स्वाहा यज्ञं कृणोतन'** कहकर ईश्वर ने स्वाहापूर्वक यज्ञ करने की आज्ञा दी है। ऋग्वेद के मन्त्र २/२/१ में **'यज्ञेन वर्धत जातवेदसम्'** कहकर यज्ञ से अग्नि को बढ़ाने की आज्ञा है।

इसी प्रकार यजुर्वेद के मन्त्र ३/१ में **'समिधाग्निं दुवस्यत धृतैर्बोधयतातिथिम्'** कहकर समिधा में अग्नि को पूजित करने व घृत से उस अग्निदेव अतिथि को जगाने की आज्ञा है।

'सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन' (यजुर्वेद ३/२) के द्वारा आज्ञा है कि सुप्रदीप्त अग्नि ज्वाला में तप्त घृत की आहुति दो।

यह संसार ईश्वर का बनाया हुआ है और सभी मनुष्यों व प्राणियों को उसी ने जन्म दिया है। अतः ईश्वर सभी मनुष्यादि प्राणियों का माता-पिता व आचार्य है। उसकी आज्ञा का पालन करना ही मनुष्य का धर्म है और न करना ही अधर्म है। इस आधार पर यज्ञ करना मनुष्य धर्म और जो नहीं करता वह अधर्म करता है।

आज संसार दुःखों से, चिन्ताओं से, भय के वातावरण में फंसते जा रहा है। धन है, परिवार है, सम्पत्ति है, सब कुछ है, किन्तु पूर्ण सुखी नहीं है। सुखों के साधन को एकत्रित करने में ही दुःखी हो गया। जब ये दुःख और बढ़ जाते हैं तो वही नर्क

कहलाते हैं। घर की सुन्दरता और महत्व स्वयं की, परिवार की चहुँमुखी उन्नति और सुख-शान्ति से है। यह सब यज्ञ से सम्भव है। जहाँ यज्ञ न हो उस घर को विश्व प्रसिद्ध विद्वान् चाणक्य घर ही नहीं मानते वे कहते हैं-

न विप्रपादोदककर्दमानि,
न वेदशास्त्रध्वनिगर्जितानि।
स्वाहा-स्वाधाकार-विवर्जितानि,
श्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि। - चा. नी. १२/६

जिन घरों में ब्राह्मणों के पाँवों को धुलाने वाले जल से कीचड़ न हो, जहाँ वेद शास्त्रों के पाठ की गर्जना (ध्वनि) नहीं हो। जो घर स्वाहा की ध्वनि से रहित हो वे घर शमशान के समान हैं। इसीलिए यज्ञ जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है, इसे अपनाकर ही जीवन सफल बना सकते हैं ।

- प्रकाश आर्य
प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा (मध्यभारत), महू (म. प्र.)

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : **AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001** में जमा करा कृपया सूचित करें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य का विषय केवल शरीर तक सीमित नहीं है, यह हमारे सम्पूर्ण जीवन का आधार है। एक विचारक ने कहा है कि स्वस्थ व्यक्ति के पास अनगिनत सपनों को पाने की शक्ति होती है, जबकि रोगी व्यक्ति का सबसे बड़ा सपना केवल स्वास्थ्य होता है। इसी कारण स्वास्थ्य को जीवन का प्रथम धन माना गया है।

स्वास्थ्य का समग्र दृष्टिकोण

सम्पूर्ण स्वास्थ्य का अर्थ है- शारीरिक तन्दुरुस्ती, मानसिक शान्ति, सामाजिक सामंजस्य और आध्यात्मिक संतुलन। यदि इन चारों में से कोई एक भी पक्ष असंतुलित हो जाए तो पूरा जीवन प्रभावित होता है।

शारीरिक स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ आहार, नियमित व्यायाम, अच्छी नींद और दिनचर्या का पालन

आवश्यक है।

मानसिक स्वास्थ्य सकारात्मक विचार, ध्यान और भावनात्मक सन्तुलन से पोषित होता है।

सामाजिक स्वास्थ्य प्रेम, सहयोग और सद्भाव की भावना से विकसित होता है।

आध्यात्मिक स्वास्थ्य आत्मचिन्तन, प्रार्थना और प्रकृति के सान्निध्य से पुष्ट होता है।

जीवनशैली और स्वास्थ्य

आज की भागदौड़ भरी दुनिया में लोग मशीन की तरह भाग रहे हैं, लेकिन ठहरकर सांस लेना भूल गए हैं। नियमित योग, ध्यान, प्राणायाम और साधारण सैर भी हमें भीतर से नई ऊर्जा देते हैं। भोजन केवल पेट भरने का साधन नहीं, आत्मा को पवित्र करने का माध्यम भी है। जितना शुद्ध भोजन होगा, विचार उतने ही सात्विक और जीवन उतना ही सुलभ होगा।

मन और आत्मा की भूमिका

मनुष्य का स्वास्थ्य उसके विचारों का प्रत्यक्ष प्रतिविम्ब है। जलन, क्रोध, लोभ और भय जैसी नकारात्मक शक्तियाँ शरीर को धीरे-धीरे खोखला कर देती हैं। वहीं संतोष, करुणा और कृतज्ञता से भरे विचार शरीर को पुष्ट, मन को शान्त और आत्मा को प्रफुल्लित बनाते हैं।

प्रकृति– सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक

ध्यान रखिए, प्रकृति स्वयं सबसे बड़ी वैद्य है। ताजी हवा, हरियाली का नजारा, नदी-तालाब का निर्मल जल और सुबह-सवेरे का सूर्य-ये सभी जीवनशक्ति के स्रोत हैं। जो व्यक्ति प्रकृति से दूर जाता है, वास्तव में वह अपने स्वास्थ्य से दूर होता है।

सन्देश

स्वास्थ्य एक साधना है। यह दवा की गोलियों से नहीं, बल्कि संतुलित दिनचर्या, स्वच्छ जीवनशैली और ऊँचे विचारों से प्राप्त होता है। स्वस्थ व्यक्ति ही समाज, परिवार और राष्ट्र को सशक्त बना सकता है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है- अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना, क्योंकि यही सच्चा धन और जीवन का परम उपहार है।

कहानी दयानन्द की

गतांक से आगे .....

कथा सरित

अलीगढ़ से हाथरस होते हुए स्वामी जी महाराज मथुरा पधारे। यह वही नगरी थी जहाँ गुरुवर विरजानन्द जी के चरणों में बैठकर के तीन वर्ष तक आर्ष ज्ञान और वेदों की कुंजी को स्वामी जी ने प्राप्त किया था। परन्तु आज तबका शिष्य मथुरा नगरी में गुरु बनकर के आया था। स्वामी दयानन्द से पहले उनकी ख्याति गन्तव्य पर पहुँच जाती थी। स्वामी जी का मानस था कि मथुरा में तो कोई भी उनके चाहने वाला नहीं मिलेगा तो आवास का क्या होगा? परन्तु ऐसा नहीं था मथुरा में उनके एक भक्त जो समृद्ध व्यक्ति भी थे उनका नाम राजा उदित नारायण सिंह था। इन्हें स्वामी जी नहीं जानते थे पर वे स्वामी जी के विचारों से गहरा लगाव रखते थे। उन्होंने सारी व्यवस्था की। प्रतीत होता है कि इस बार मथुरा वृन्दावन आने का स्वामी जी का उद्देश्य रंगाचार्य से शास्त्रार्थ करना था। क्योंकि काशी के पण्डितों के पश्चात् मूर्तिपूजा के अत्यन्त प्रबल समर्थक रंगाचार्य थे अतः स्वामी जी चाहते थे कि उनको शास्त्रार्थ में पराजित किया जाए। वृन्दावन में विज्ञप्ति लगा दी गई कि स्वामी जी के व्याख्यान मूर्तिपूजा, अवतार, तिलक छाप इन सबके खण्डन में हुआ करेंगे और एक चिट्ठी रंगाचार्य को भी लिखी गई थी कि वह शास्त्रार्थ के लिए आमन्त्रित हैं। उन दिनों रथ का मेला चल रहा था। रंगाचार्य ने कहा कि इसके बाद देखेंगे। उधर स्वामी जी के व्याख्यानों में भारी भीड़ आती थी और स्वामी जी की युक्तियुक्त बातों को सुनकर आश्चर्यचकित रह जाती थी। जब वह समय आया कि रथ का मेला समाप्त होने पर रंगाचार्य को शास्त्रार्थ के लिए आना था, तब उन्होंने कहलवा दिया कि वह बीमार हैं नहीं आ सकते। हो सकता है वह बीमार हों क्योंकि एक महीने पश्चात् ही उनकी मृत्यु हो गई, परन्तु इतने बीमार तो निश्चित नहीं थे कि शास्त्रार्थ न कर पाते। परन्तु स्वामी जी की विद्वता के बारे में और उनकी युक्तियों के बारे में अब तक पर्याप्त प्रसिद्ध हो चुकी थी, अतः वास्तविकता यह है कि रंगाचार्य उनसे शास्त्रार्थ नहीं करना चाहते थे।

आपने अब तक देखा कि स्वामी जी जहाँ भी जाते थे उनसे द्वेष रखने वाले लोग उनका हर तरीके से अपमान करने में संकोच नहीं करते थे। मथुरा वृन्दावन का यह प्रवास भी अपवाद न रहा। मुंशी हरदेव गोविन्द नाम के एक व्यक्ति ने इसी द्वेष के वशीभूत मुट्ठी में धूल भरकर स्वामी जी के ऊपर डाल दी। सोचिए यह कितना बड़ा अपमान था परन्तु स्वामी जी ने उस पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

इस प्रकार एक पौराणिक पण्डित मोहनलाल थे उन्होंने स्वामी जी के ऊपर संस्कृत में श्लोक बनाकर और हिन्दी में भी अत्यन्त निन्दा जनक बातें की।

मथुरा में भी कुछ दुष्ट लोगों ने ऐसा किया। एक शराब बनाने वाला कलाल और एक कसाई स्वामी जी के डेरे पर जाकर के शोर मचाने लगे कि स्वामी जी महाराज हमारे शराब और मांस के पैसे तो दीजिए। स्वामी जी ने हंस कर कहा अच्छा ठीक है व्याख्यान के बाद तुम्हारा हिसाब कर दूँगा। व्याख्यान के बाद स्वामी जी ने एक हाथ से एक का दूसरे से दूसरे का सिर पकड़ कर कहा बताओ तुम्हारे कितने-कितने पैसे हैं? स्वामी जी का बल देखकर वह हाथ जोड़कर क्षमा माँगने लगे कि हमें तो किसी ने भेजा था। स्वामी जी ने उन्हें तुरन्त क्षमा कर दिया।

स्वामी जी के जीवन चरित्र का अध्ययन करते-करते आप देखेंगे कि वह किसी भी परम्परा के उस प्रकार के अनुयायी नहीं हैं कि बिना तर्क के उसे मानते रहे। आप आजकल के साधुओं को देखेंगे भस्म विभूति लगाकर रहते हैं अगर उनसे कहें कि आप यह भस्म क्यों लगाते हैं तो वह यह कहने में संकोच नहीं करेंगे यह हमारा धर्म है। स्वामी जी से भी यह प्रश्न किया गया पर स्वामी जी का उत्तर सुनिए। उन्होंने कहा कि इसको लगाने से मक्खी शरीर पर नहीं लगती वरना इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। दयानन्द की यही प्रगतिशीलता तर्कशीलता उनको अन्य सबसे पृथक उच्च आसन पर प्रतिष्ठित कर देती है।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

समाचार

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली

भव्य स्मारिका का प्रकाशन : वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों महानुभावों से निवेदन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के २००वें जयन्ती वर्ष एवं १५०वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों- ज्ञान ज्योति महोत्सव के समापन के रूप में आयोजित 'आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली- २०२५' के अवसर पर प्रकाशित होने वाली भव्य स्मारिका हेतु वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों से आर्य समाज के अनछुए विषयों, समसामयिक विषयों एवं आर्य जगत् की महान् विभूतियों जिनके कार्यों को आजतक किसी ने नहीं जाना पहचाना उनकी स्मृतियों को दृष्टिगत रखते हुए लेख आमन्त्रित किए जाते हैं।

इस संबंध में समस्त वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों महानुभावों से निवेदन है कि अपने लेख ए- ४ पेपर पर बाएं साईड में कम से कम २ इंच का हाशिया छोड़कर स्पष्ट अक्षरों में लिखकर या टाईप कराकर निम्न पते पर भेजें या ईमेल करें।

स्मारिका संयोजक- आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली- २०२५
१५, हनुमान रोड़, नई दिल्ली- ११०००१, Email: aryasabha@yahoo.com

शास्त्रार्थ एवं शुद्धि सम्मेलन

ठाकुर विक्रम सिंह के ८३वें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में १६ सितम्बर शुक्रवार २०२५ को आर्यसमाज मन्दिर ग्रेटर कैलाश, पार्ट- १, नई दिल्ली में 'शास्त्रार्थ एवं शुद्धि सम्मेलन' का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में शास्त्रार्थ करने वाले विद्वान्-विदुषियों का सम्मान किया गया। साथ ही जो महानुभाव शुद्ध हुए हैं या घर-वापसी किया है, उनका भी अभिनन्दन-सम्मान किया गया। इस अवसर पर 'शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी ग्रन्थ संग्रह' (सम्पादक- डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, पृष्ठ ७२८) का लोकार्पण (विमोचन) भी सम्पन्न हुआ।

श्री सुभाष अष्टीकर जी निधन

आर्य प्रतिनिधि सभी कर्नाटक के पूर्व प्रधान एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभी नई दिल्ली के पूर्व अन्तरंग सदस्य श्री सुभाष मारूतराव

अष्टीकर जी का ७८ वर्ष की आयु में दिनांक २७ अगस्त २०२५ को अकस्मात् निधन हो गया। वे काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार २७ अगस्त को हल्लीखेड कर्नाटक में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति एवं सामर्थ्य प्रदान करे।

आर्य समाज हिरण मगरी का वेद प्रचार उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज-हिरण मगरी; उदयपुर का चार दिवसीय वेद प्रचार उत्सव १८ सितम्बर से २१ सितम्बर तक प्रातः एवं सायं यज्ञ, भजन, प्रवचन और अभिनन्दन के साथ सम्पन्न हुआ। २१ सितम्बर को आर्य समाज के सेक्टर-४ स्थित सत्संग भवन में सम्पन्न समापन समारोह में अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता और आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् के उप प्रधानाचार्य आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर प्रदत्त वेद ज्ञान से लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा मानवता और संसार के उपकार के लिए वेद ज्ञान को जीवन के आचरण में लाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हर घर में एक वैदिक पुस्तकालय और एक शस्त्रागृह अवश्य होना चाहिए। सुमेरपुर के वैदिक भजनोपदेशक पण्डित केशवदेव शर्मा ने प्रभु-भक्ति एवं ऋषि दयानन्द सरस्वती की महिमा पर भजन सुना कर श्रोताओं का मन मोह लिया। कार्यक्रम के

अध्यक्ष- श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वदेशी और स्वराज के प्रथम उद्घोषक थे । स्वराज, स्वधर्म और स्वसंस्कृति के लिए आर्य समाज के १० नियमों के माध्यम से महर्षि ने विश्व में शान्ति और कल्याण हेतु वैश्विक संविधान दिया। कार्यक्रम के सभी सत्रों में इन्द्र प्रकाश वैदिक के पौरोहित्य में दैनिक यज्ञ हुआ जिसमें यजमानों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। माँ शारदा आर्य समिति के तत्वावधान में राष्ट्रीय सेविका समिति की छात्राओं ने लव-जेहाद पर आधारित लघु नाटिका प्रस्तुत कर किसी भी प्रकार के छलावे से बचे रहने हेतु सावचेत किया। स्वागत उद्बोधन आर्य समाज के प्रधान भंवरलाल आर्य और आभार मंत्री वेदमित्र आर्य द्वारा ज्ञापित किया गया। समारोह में यज्ञ और सोलह संस्कारों का घर-घर में प्रचार कर रहे समाज के पुरोहित इन्द्र प्रकाश वैदिक, सरला आर्या, रामदयाल मेहरा, चन्द्रकान्ता वैदिका और डॉ. भूपेन्द्र शर्मा का अभिनन्दन गायत्री पट्टिका से किया गया। संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया। समारोह में प्रो. डॉ. अमृतलाल तापड़िया, शारदा गुप्ता, भवानीदास आर्य, कृष्ण कुमार सोनी, चन्द्रकान्ता यादव, प्रीति चौहान, सुभाष चन्द्र कोठारी, सत्य प्रकाश शर्मा, देवेन्द्र कुमार आर्य, डॉ. एम. जी. वार्ष्णेय, श्रेणीदान चारण सहित बड़ी संख्या में आर्यजन उपस्थित रहें। शान्तिपाठ, जयघोष और भोजन प्रसाद के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– डॉ. भूपेंद्र शर्मा-प्रचार मंत्री, आर्य समाज हिरण मगरी; उदयपुर

सत्यार्थ सौरभ के सुधि पाठकों! प्रथम तो आप सभी का धन्यवाद की आपने सत्यार्थ सौरभ पत्रिका को बहुत ही सराहा। आपको प्रत्येक मास की 20 तारीख तक पत्रिका प्राप्त नही होती है तो कृपया 9314535379 पर सम्पर्क कर सूचित करें जिससे हम पुनः आपको दूसरी प्रति भिजवाने का प्रयास करेंगे।

हलचल

नूतन आविष्कार- हवा से पानी

जल संकट को लेकर के आज विश्व में चिन्ता के बादल मंडरा रहे हैं। ऐसे-ऐसे देश और शहर के नाम हमारे समक्ष आते हैं जहाँ विकट संकट खड़ा हुआ है। भूजल बहुत ज्यादा नीचे जा चुका है परन्तु मनुष्य तो मनुष्य है वह किसी भी परिस्थिति में हारने को तैयार नहीं। अब एक नई तकनीक से जल बनाया जा रहा है। आप सभी जानते हैं कि वायु में नमी होती है तो नमी को सुखा करके और उसको संघनित करके इजरायल द्वारा एक तकनीक विकसित की गई है, जिससे पानी बनाया जा रहा है। अभी गाजापट्टी का नाम सभी ने बहुत सुना होगा। वहाँ भी इस तरह की मशीन लगाई गई और ऊर्जा की खपत बढ़ाने के लिए उनमें सोलर बैटरीज लगाई गई। उससे वहाँ शुद्ध पानी बनाकर लोगों को मुहैया कराया गया।

इजराइल में Watergen और Technion-H2oll जैसी कम्पनियों ने हवा में मौजूद नमी से पीने योग्य पानी तैयार करने का अद्भुत काम किया है।

इस प्रणाली में वातावरण की हवा को मशीन में खींचा जाता है, जहाँ पहले एयर फिल्टर से धूल और प्रदूषण हटाया जाता है। फिर ठंडे कॉइल या कम्प्रेसर के जरिए हवा को कंडेंस (ओस में बदलने) करके पानी निकाला जाता है। पानी को फिर फिल्टर व यूवी प्रक्रिया से साफ करके पीने योग्य बनाता है।

ये मशीनें छोटे घरेलू यूनिट (जैसे Genny 30 L/दिन क्षमता) से लेकर बड़े इंस्टॉलेशन (हजारों लीटर/दिन) तक हर आकार में उपलब्ध है। जहाँ बड़े-बड़े रेगिस्तान हैं वहाँ इनका उपयोग करके बहुत कुछ किया जा सकता है। छोटी मशीन जहाँ एक दिन में 30 लीटर पानी तैयार कर देती हैं वहीं ऐसी भी मशीनें हैं जो ६००० लीटर प्रतिदिन पानी बना देती हैं।

परन्तु यह भी ध्यान रखें कि मानव के आविष्कार दुधारी तलवार होते हैं। जहाँ लाभ हैं वहाँ हानि भी हो सकती है। नमी निकली हुई हवा प्राणवायु के रूप में उतनी उपयुक्त नहीं रहती, यद्यपि उसमें ऑक्सीजन और नाइट्रोजन की कोई कमी नहीं होती।

वैज्ञानिक रूप से आदर्श नमी का स्तर होता है: 40% से 60% RH (Relative Humidity) यह स्तर प्राणवायु को श्वास के लिए अधिक उपयुक्त बनाता है, इसे ध्यान रखना होगा।

ईमानदारी की सच्ची मिसाल

आज के इस युग में आम सोच यही है कि लालच और भ्रष्टाचार से

व्याप्त परिवेश में 'अस्तेय' की भावना किसी के अन्दर होगी यह सम्भव नहीं है। परन्तु ऐसा नहीं है। आज भी कुछ लोग हैं जो चमकते सोने से, उसके आकर्षण से असम्पृक्त रह सकते हैं। ये वही गिने चुने लोग हैं जिन्होंने शास्त्र के 'पर द्रव्येषु लोष्ठवत्' के सुभाषित को अपने जीवन में उतारा है। ऐसी ही एक महिला स्थानीय SBI बैंक में कार्यरत हैं, नाम है श्रीमती सुगना देवी राठौड़। इनको अनायास एक स्वर्ण हार मिला। हो सकता है किसी ग्राहक ने लॉकर से निकला हो और गिर गया हो। बताया गया कि हार की कीमत ६-७ लाख रुपए से कम नहीं थी। परन्तु इन सब बातों ने सुगना जी पर कोई प्रभाव नहीं डाला। उनके अपने जीवन दर्शन में तो दूसरों का धन उनके लिए मिट्टी के ढेले के समान था। अतः उन्होंने तुरन्त वह हार अपने अधिकारी को दिया ताकि वे सम्बन्धित व्यक्ति को लौटा दें। अगर विचार करेंगे तो यह कोई सामान्य घटना नहीं है। विरले ही देखने में आती है। श्रीमती सुगना जी राठौड़ श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास; उदयपुर के जनसम्पर्क सचिव श्रीमान् विनोद जी राठौड़ की धर्मपत्नी हैं, इसलिए वैदिक शिक्षाएँ इस परिवार के जीवन के केन्द्र में अवस्थित हैं, उसी का यह सुपरिणाम है। उदयपुर के केन्द्रीय SBI शाखा के क्षेत्रीय प्रबन्धक महोदय श्रीमान् एम. जी. व्यास ने आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए आपको सम्मानित किया। न्यास की ओर से भी श्रीमती सुगना देवी जी राठौड़ को बहुत-बहुत बधाई। - भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

श्री विजय विप्लवी डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित

उदयपुर के जाने-माने समाजसेवी श्री विजय विप्लवी ने 'पण्डित दीनदयाल उपाध्याय-एक पत्रकार' के नाम से विस्तृत शोध प्रबन्ध

प्रस्तुत किया, जिस पर उनको डॉक्टरेट की उपाधि मिली। इस पुस्तक को लिखने में उन्होंने प्रभूत पुरुषार्थ किया, इसमें कोई सन्देह नहीं, क्योंकि सम्बन्धित लोगों के पास पूरे भारतवर्ष में घूम-घूम कर वहाँ से उनके संस्मरण एकत्रित कर, उपाध्याय जी के पत्रकार स्वरूप को प्रमाणित रूप में हम सब के सामने लाने का स्तुत्य कार्य किया है। आपको २०२५ के हिन्दी सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। सिक्किम के गवर्नर महामहिम ओम जी माथुर के कर कमलों द्वारा इस पुस्तक का विमोचन किया गया। डॉक्टर विजय विप्लवी एवं उनके सह लेखक डॉक्टर कुंजन आचार्य को श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास की ओर से बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएँ। - अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

Fit Hai Boss
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 October-2025 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

(बालकों को) जैसी अन्य शिक्षा की, वैसी चोरी, जारी, आलस्य, प्रमाद, मादक-द्रव्य, मिथ्याभाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या, द्वेष, मोह आदि दोषों के छोड़ने और सत्याचार के ग्रहण करने की शिक्षा करें।

सत्यार्थ प्रकाश: द्वितीय समुल्लास पृष्ठ ३४

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर